

विश्व हिंदी समाचार

Vishwa Hindi Samachaar

विश्व हिंदी सचिवालय, गारीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष: 15 अंक: 58 जून, 2022

विश्व हिंदी सचिवालय के महत्त्वपूर्ण आयोजन हिंदी में स्वरचित गीतों की प्रस्तृति



20 अप्रैल, 2022 को विश्व हिंदी सचिवालय ने 'हिंदी में स्वरचित गीतों की प्रस्तुति' का आयोजन किया, जिसमें कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय की स्थायी सचिव, डॉ. श्रीमती लीला देवी लकीनारायण, शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय की स्थायी सचिव, श्रीमती शबीना लोतन एवं प्रबंधक (शिक्षा) श्री निरंजन बिगन तथा भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव (हिंदी एवं संस्कृति) श्रीमती सुनीता पाहूजा समारोह में गणमान्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

षु. 2

'हिंदी के वैश्विक प्रसार में रामकथा की भूमिका' विषयक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी



11 मई, 2022 को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा 'हिंदी के वैश्विक प्रसार में रामकथा की भूमिका' विषयक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्री, माननीय

श्री अविनाश तिलक और विशेष अतिथि के रूप में भारतीय उपउच्चायुक्त, श्री जनेश केन उपस्थित रहे।

पृ. 3-4

'हिंदी में व्यंग्य-लेखन' विषयक एक दिवसीय कार्यशाला



22 जून, 2022 को विश्व हिंदी सचिवालय ने भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में हिंदी में व्यंग्य-लेखन विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला के अतिथि वक्ता, भारत के स्थापित हिंदी लेखक,

संपादक एवं विख्यात व्यंग्यकार, डॉ. प्रेम जनमेजय रहे। कार्यशाला के उपरांत 23 जून, 2022 को सचिवालय ने 'एक शाम, हिंदी व्यंग्य के नाम' कार्यक्रम का आयोजन किया।

पृ. 4-7

'विदेशों में हिंदी अधिगम की चुनौतियाँ' विषयक वेब संगोष्ठी

8 मई, 2022 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद् तथा विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा 'विदेशों में हिंदी अधिगम की चुनौतियाँ' विषय पर एक वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. जिष्णु शंकर, पूर्व विरिष्ठ हिंदी व्याख्याता, यूनिवर्सिटी ऑव टेक्सस और कोलंबिया यूनिवर्सिटी, अमेरिका, श्री गंगाधरसिंह गुलशन सुखलाल, विरेष्ठ प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, भाषा संसाधन केंद्र, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस तथा डॉ. राम प्रसाद भट्ट, रीडर एवं सीनियर रिसर्च एसोसिएट, एशियन-अफ़्रीका इंस्टीट्यूट, हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी उपस्थित थे।

पु. 10

डॉ. दिनेश पाठक 'शशि' की दो पुस्तकों का लोकार्पण



24 अप्रैल, 2022 को मथुरा में राष्ट्रवादी वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. दिनेश पाठक 'शिश' के लघुकथा-संग्रह 'सत्य का बोध' तथा अंग्रेज़ी बाल कहानी-संग्रह 'थैंक्यू मैम' का लोकार्पण फ़िल्म अभिनेत्री और

सांसद, माननीया श्रीमती हेमा मालिनी के हाथों किया गया

पृ. 12

श्री अच्युतानंद मिश्र को प्रतिष्ठित देवीशंकर अवस्थी सम्मान



4 अप्रैल, 2022 को रवींद्र भवन में स्थित साहित्य अकादमी सभागार में आयोजित समारोह में साहित्यकार अच्युतानंद मिश्र को प्रतिष्ठित 'देवीशंकर अवस्थी सम्मान' से अलंकृत किया गया।

श्री अच्युतानंद मिश्र को यह पुरस्कार उनकी आलोचना पुस्तक 'कोलाहल में कविता की आवाज़' के लिए दिया गया।

पृ. 15

जाने-माने विद्वान डॉ. रमाकांत शुक्ल का निधन



11 मई, 2022 को देश के जाने माने संस्कृत के विद्वान डॉ. रमाकांत शुक्ल का 82 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वर्ष 2015 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया था। विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्मा को भावभीनी श्रद्धांजला।

पृ. 15

इस अंक में आगे पढ़ें :

- कार्यशाला/संगोष्ठी/गोष्ठी/वेब संगोष्ठी/ काव्य गोष्ठी/ संवाद/रचना-पाठ/चर्चा
- लोकार्पण

- पृ. 7-12 पृ. 12-15
- सम्मान एवं पुरस्कार
- श्रद्धांजिलसंपादकीय

पृ. 14-15 पृ. 15

पृ. 16

ISSN 1694-2485

Newsletter WHS June 2022 v2.indd 1

07/06/2023 11:50:35

मॉरीशस में 'हिंदी में स्वरचित गीतों की प्रस्तुति'



20 अप्रैल, 2022 को विश्व हिंदी सचिवालय ने 'हिंदी में स्वरचित गीतों की प्रस्तुति' का आयोजन किया।

कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय की स्थायी सचिव, डॉ. श्रीमती लीला देवी लकीनारायण, शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय की स्थायी सचिव, श्रीमती शबीना लोतन एवं प्रबंधक (शिक्षा) श्री निरंजन बिगन तथा भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव (हिंदी एवं संस्कृति), श्रीमती सुनीता पाहूजा समारोह में गणमान्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।



समारोह का शुभारम्भ श्रीमती शबीना लोतन, डॉ. श्रीमती लीला देवी लकीनारायण तथा श्रीमती सुनीता पाहूजा द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन के साथ हआ।

इस कार्यक्रम का आयोजन शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में और कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय के सहयोग से हुआ।

श्रीमती शबीना लोतन ने अपना संदेश देते हुए संगीत द्वारा भाषा के रसपूर्ण विकास पर बात की। उन्होंने कहा कि "मौलिकता और सृजनात्मकता प्रबल होती है। स्वरचित गीतों की रचना करना भाषा और कला का पवित्र संगम स्थापित करना है।"



डॉ. श्रीमती लीला देवी लकीनारायण ने अपने वक्तव्य में कला के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा कि ''कला जीवन की एक आवश्यकता है। संगीत

और गीत कला के ऐसे रूप हैं, जिनमें रचनात्मक कौशल और उत्तम कल्पना-शक्ति की आवश्यकता होती है। ये मन को शांत करने का एक माध्यम हैं। गीत-संगीत सामाजिक एकता स्थापित करते हैं तथा इसमें जोड़ने की शक्ति होती है।" उन्होंने कहा कि गीतों के लेखक अपने गीतों के माध्यम से समाज को महत्त्वपूर्ण संदेश देते हैं।



श्रीमती सुनीता पाहूजा ने रचना के मूल आधार पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ''सृजन बहुत व्यापक संकल्पना लिए हुए

होता है। उसका प्रभाव भी बहुत विस्तृत होता है। किसी भी रचना का आधार संवेदनशीलता होता है। अपने अंतस के अद्गारों एवं अनुभूतियों को व्यक्त करना, यह एक अनुपम व अद्भुत कौशल है। यही सृजन का आधार है।" उन्होंने रचनाकारों की रचनाओं में निहित संस्कारों पर बल देते हुए कहा कि आने वाली पीढ़ी अवश्य ही उससे प्रभावित तथा प्रोत्साहित होंगे।

समारोह के आरम्भ में सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने उपस्थित महानुभावों तथा सभी अतिथियों का स्वागत करते



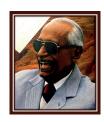
हुए बताया कि 'हिंदी में गीतों की रचना कई युगों से निरंतर होती आ रही है। मॉरीशस में हिंदी साहित्य जहाँ समृद्ध है, वहाँ गीत-लेखन के क्षेत्र में भी रचनाकार अपने सृजन

कौशल का प्रमाण देते आ रहे हैं। इस कार्यक्रम के माध्यम से हम देश के विरष्ठ और नवोदित गीतकारों की सुंदर रचनाएँ प्रकाश में ला रहे हैं, जिससे कि हिंदी भाषा में गीत-लेखन को बढ़ावा मिले और गीतों के माध्यम से हिंदी भाषा को लोकप्रियता मिले।" उन्होंने गीतों के माध्यम से हिंदी भाषा को सशक्त बनाने पर बल दिया।

स्वरचित प्रस्तुतियों का आरम्भ श्रीमती महेश्वरी सीसर्न द्वारा रचित 'वरदे माँ सरस्वती' नामक सरस्वती वंदना से हुई, जिसमें श्री जयराज संतोखी, श्री साहिल गोबिन, श्री रामा बिमल तथा श्री अनंत कुमार चत्तु ने भाग लिया। तत्पश्चात्, श्री मोहरलाल चमन द्वारा 'देशवासी हम सभी मॉरीशस धरा की आन है' नामक गीत-प्रस्तृति हुई, जिसमें श्री यशपाल दीक्षित जोगेश्वर, श्री संदीप गुलोब, श्री दिजेश पर्याग, श्री अदीप चकोरी तथा श्री राजीव भोला सम्मिलित रहे। इस गीत-प्रस्तित में मॉरीशस द्वीप तथा यहाँ मेहनत से काम करने वालों का संदर बखान किया गया। सुश्री प्रियंवदा चतुआर द्वारा 'प्रकृति का गान' प्रस्तृत किया गया, जिसमें श्री उत्तम लोलसा, श्री निलय जोधन तथा श्री नरेंद्र सिंह बझावन प्रतिभागी रहे। इस गीत के माध्यम से प्रकृति का मार्मिक वर्णन किया गया। इसके अतिरिक्त, श्री अभिमन्यु हरिपोल 'माहेन' द्वारा 'हिंदी भाषा का महत्त्व' गीत की प्रस्तुति हुई, जिसमें श्री राजन हरिपोल, श्री लल्लन सल्तू, श्री अनिल हरिपोल एवं श्री सतानन बीरज् ने गायन किया। इस गीत-प्रस्तुति के माध्यम से गीतकर ने हिंदी भाषा को सर्वोपिर बताया। सुश्री ज्ञानेश्वरी गुईन द्वारा 'मिट्टी है हमारी' गीत-प्रस्तुति हुई। उनके साथ सुश्री वर्षा रानी उज्ञागीर, श्री नमलेश बंधोआ, सुश्री विश्वानी बिहारी, सुश्री तेजस्विनी गोपालुडू, सुश्री हेमाबाई सोनाक, श्री चेतन कुपला एवं श्री आदर्श हीरा ने भी गायन किया। इस गीत के माध्यम से प्रकृति के सुंदर दृश्य को उद्घाटित किया गया।



इसके पश्चात्, श्री चन्द्रदेव सुपोल 'बसन्त' द्वारा 'हिंदी प्रेम की भाषा' गीत प्रस्तुत किया गया। श्री रविसिंह तातारी, श्रीमती ललिता गजाधर तथा श्री स्वदेश गोपोल ने उनका साथ दिया। इस गीत-प्रस्तुति में हिंदी भाषा को सबकी पहचान बताया गया। श्री हिमेश गुरापा द्वारा 'नेक कमाई कर ले प्यारे' पर गीत-प्रस्तुति हुई, जिसमें श्रीमती प्रवीणा देवी गोरीबा-गुरापा, श्रीमती दानी बिसेसर, श्रीमती रेखा बुलाकी, श्री अक्षय कुमार नोहर, श्री विराज कवि सुमारी एवं श्री रूमेश रघुनोथ ने भाग लिया। इस गीत के माध्यम से नेक काम करने पर बल दिया गया। अंतिम प्रस्तुति श्री विष्णु हरि द्वारा 'ज़िंदगी आनी-जानी, जैसे दरिया का पानी' का गायन हुआ, जिसमें श्री दीपकसिंह किस्नदोयाल, श्री शक्ति शिब्, श्रीमती रिश्ता बिस्नोथ दियाल, स्श्री भूमि किस्नदोयाल, श्री वेदेश साई भ्तूआ एवं श्री मीहिर साई भुत्आ ने गायन किया। इस गीत में जीवन की वास्तविकता से अवगत कराया गया।



इस अवसर पर प्रसिद्ध हिंदी सेवी, गीतकार, संगीतकार एवं गायक स्वर्गीय डॉ. ब्रजेंद्र कुमार भगत 'मधुकर' को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई। डॉ.

ब्रजेंद्र कुमार भगत 'मधुकर' ने अपने गीतों से प्रेम और माधुर्य बिखेरा था। 'मधुदीप', 'मधुश्री', 'मधुबहार', 'मधुरिमा', 'मधुमालती', 'मधुघोष' आदि उनके गीतिकाव्यों के संकलन हैं। साथ ही, उनके प्रति श्रद्धांजिल अर्पित करते हुए एक वीडियो प्रस्तुति हुई, जिसमें डॉ. ब्रजेंद्र कुमार भगत 'मधुकर' ने एक साक्षात्कार के अंतर्गत अपने गीतों की रचना के अनुभव साझा किए थे तथा उनके एक सुमधुर गीत की प्रस्तुति की गई।

समारोह का मंच-संचालन तथा धन्यवाद-ज्ञापन विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

1S June 2022 v2.indd 2 07/06/2023 11:50:3

'हिंदी के वैश्विक प्रसार में रामकथा की भूमिका' विषयक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी



11 मई, 2022 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में और कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय, साहित्यिक, सांस्कृतिक शोध संस्था, रामायण सेंटर एवं रामायण सेवा सदन के सहयोग से 'हिंदी के वैश्विक प्रसार में रामकथा की भूमिका' विषयक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का शुभारम्भ दीप-प्रज्ज्वलन से हुआ।



मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्री, माननीय श्री अविनाश तिलक ने सचिवालय की इस

गतिविधि की सराहना की। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि "यदि हम अपनी भाषा -हिंदी को जीवित रखना चाहते हैं, तो इसका उत्तरदायित्व माता-पिता का है। हमें ही पहल करनी चाहिए। हमें रामायण के माध्यम से हिंदी को बढ़ावा देने का संकल्प लेना चाहिए। रामायण के युद्ध की भाँति हमारे दैनिक जीवन में भी हम युद्ध का सामना करते रहते हैं, परंतु धर्म रूपी धनुष के माध्यम से हम अपने दैनिक जीवन के इस युद्ध पर विजय पा सकते हैं।"

विशेष अतिथि, भारतीय उपउच्चायुक्त, श्री जनेश केन ने अपना वक्तव्य देते हुए रामकथा



को आदर्श जीवन की कथा बताया। उन्होंने कहा कि "जीवन के हर पहलू में रामकथा की झलक पाई जाती है

तथा वह भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। रामकथा भारत और मॉरीशस जैसे देशों की अस्मिता है। तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना आसान भाषा में की, जिससे श्री राम जी का संदेश हर किसी के पास पहुँचा।"

समारोह के आरंभ में विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने हिंदी को रामचरितमानस से जोड़ते हुए उसके महत्त्व को रेखांकित किया और कहा ''हिंदी साहित्य की सर्वोत्तम रचना रामचरितमानस के



आधार पर विश्व में रामकथा का प्रचलन हुआ। जहाँ भी रामकथा के साथ जुड़ने का उत्साह जागा, वहाँ हिंदी जानने, सीखने और समझने की ललक भी उत्पन्न

हुई।" उन्होंने आज के युग में रामचिरतमानस की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि "रामचिरतमानस की रचना कई शताब्दियाँ पहले हुई, पर यह ग्रंथ उतना ही नया है, जितना भिक्त युग में था। आज भी जन-कल्याण के लक्ष्य से विश्व भर की अनेक संस्थाएँ प्रत्यक्ष रूप से रामकथा और अप्रत्यक्ष रूप से हिंदी भाषा के प्रचार में संलग्न हैं।"



शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रबंधक (शिक्षा), श्री निरंजन बिगन ने अपना संदेश देते हुए बच्चों के व्यावहारिक जीवन में

माता-पिता के कर्तव्यों तथा रामकथा एवं हिंदी के अंतर्सबंध पर बल दिया और कहा 'यदि माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे कल प्रगति करें, तो उन्हें अपने बच्चों के व्यक्तित्व-निर्माण एवं चरित्र-निर्माण में निवेश करना चाहिए, ताकि उनका एक सुखद भविष्य बने। रामचरितमानस एक वट-वृक्ष है, तो हिंदी उसकी छाया है। हिंदी का उन्नयन रामकथा के उन्नयन में निहित है।"



इस अवसर पर रामायण सेंटर के विद्यार्थियों ने रामचिरतमानस के 'भरत मिलाप' और 'अयोध्या वापसी' प्रसंग के आधार पर दोहा 3 और 4 की सुंदर प्रस्तुति दी।



रामायण सेंटर की अध्यक्षा, डॉ. विनोद बाला अरुण ने वीडियो के माध्यम से 'हिंदी के वैश्विक प्रसार में रामायण सेंटर की भूमिका' विषय पर वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि "रामायण सेंटर न केवल रामायण के आदर्शों और मूल्यों के प्रचार-प्रसार में, बल्कि हिंदी भाषा के उन्नयन में भी कार्यरत है, जिनमें रामचिरतमानस का सुचारु रूप से पठन तथा व्याख्या की कक्षाएँ सम्मिलित हैं। यह सेंटर नियमित रूप से राम कथा पर आधारित पुस्तकों का प्रकाशन और रेडियो पर वार्ताओं का प्रसारण भी करता है।"

साहित्यिक, सांस्कृतिक शोध संस्था के सचिव तथा सठाई कॉलिज एवं मुंबई विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष, श्री प्रदीप कुमार सिंह ने संस्था की जानकारी देते हुए कहा कि "साहित्यिक,



सांस्कृतिक शोध संस्था रामकथा के प्रचार में पूरे विश्व में भ्रमण कर रही है। इस दौरान हमने पाया कि भाषा के साथ-साथ हमें हर जगह राम संस्कृति ही

मिली। रामकथा का विश्व संदर्भ में निर्माण करना संस्था का लक्ष्य था। इस संदर्भ में प्रथम खण्ड 'लोकगीत और लोककथाओं में रामकथा का विश्व संदर्भ कोश' का लोकार्पण किया जा चुका है। इसका द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ खण्ड इस वर्ष के अंत में लोकार्पित किया जाएगा। राम की कथा पूरे विश्व में फैली हुई है।"

इसके पश्चात् भारत से आए सेवानिवृत्त पी.सी.एस. अधिकारी, श्री सुरेश चंद्र तिवारी ने हिंदी भाषा को



विश्व भाषा के रूप में प्रतिष्ठित कराने में रामकथा के योगदान पर बात की। उन्होंने कहा कि "श्री रामचरितमानस के गायन, मनन, अनुपालन के माध्यम से ही विश्व

स्तर पर हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार हो रहा है। हमारे पूर्वजों ने दारुण परिस्थितियों को झेलते हुए भी रामचरितमानस को संजोए रखा।"



इस अवसर पर रामायण सेवा सदन की सदस्याओं ने रामचरितमानस के 'सुंदरकाण्ड' प्रसंग के आधार पर एक दोहा और एक चौपाई की मनभावन प्रस्तुति की।

प्रस्तुति के उपरान्त, रामायण सेवा सदन की अध्यक्षा, डॉ. राजवंती मातादिन ने 'हिंदी के प्रचार में रामायण सेवा सदन की भूमिका' पर वक्तव्य





दिया। उन्होंने रामायण सेवा सदन के उद्देश्य का उल्लेख किया और कहा कि "सेवा सदन हिंदी



भाषा और संस्कृति के माध्यम से बच्चों में मानवीय गुण पुष्पित और पल्लवित करता है। हिंदी भाषा एवं संस्कृति को बढ़ाने के लिए रामकथा की भूमिका को सुदृढ़

बनाकर सदन राम के प्रसंगों का मंचन करके जन मानस पर चिरस्थायी प्रभाव डालता है।"

इसके बाद, साहित्यिक, सांस्कृतिक शोध संस्था के अध्यक्ष, डॉ. बनवारीलाल जजोदिया 'यथार्थ' ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि



''राम कथा धार्मिक होते हुए भी, स्वतंत्र रूप से सत्य की खोज भी है। उसमें तर्कशास्त्र और प्रमाणशास्त्र का समोचित प्रयोग हुआ है और लोक-कल्याण

का ध्यान रखा गया है। रामचरितमानस में निहित हिंदी संवादों ने ही हिंदी के वैश्विक प्रसार में महती भूमिका निभाई है।" उन्होंने रामचरितमानस में मर्यादित जीवन दर्शन के आधार पर विश्व मानव धर्म संविधान बनाने का प्रस्ताव रखा, जिसके अंतर्गत बिना जाति धर्म के सार्वजनिक जीवन हेत् समान नियम लागू किए जाएँ।

टी.एम.बी. विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार के संदरवती महिला कॉलिज के हिंदी विभाग की



एसोसिएट प्रोफ़ेसर, डॉ. आशा तिवारी ओझा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ''हिंदी मात्र एक भाषा ही नहीं, वरन् एक संस्कृति तथा एक

संस्कार भी है। जहाँ-जहाँ रामकथा है, वहाँ-वहाँ हिंदी भाषा तरंगित होती रहती है। रामचरितमानस ने लोक वाङ्मय में रामकथा को जन-जन तक पहुँचाया और हिंदी को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित कर दिया।"



लोक गीतों की गायिका एवं लेखिका, डॉ. नीतू कुमारी नवगीत ने 'लोक गीतों में प्रभू श्री राम और माता

सीता का जीवन' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने लोक गीत सुनाकर श्री राम और माता सीता के जीवन में जुड़ाव को संगीतबद्ध किया और कहा कि ''रामचरितमानस के माध्यम से आने वाली पीढी में भक्ति, संस्कार, चेतना, नैतिकता और मानव मूल्यों का संचरण हो सकता है।"





इस उपलक्ष्य में आमंत्रित अतिथियों के हाथों रामायण सेवा सदन के उपाध्यक्ष और अध्यक्षा तथा साहित्यिक, सांस्कृतिक शोध संस्था के सचिव को प्रमाण-पत्र दिया गया।



साथ ही, साहित्यिक, सांस्कृतिक शोध संस्था की ओर से गणमान्य अतिथियों को विश्व कोश, शील्ड तथा दुशाला से सम्मानित किया गया।

समारोह के अंत में गोरखपुर के सिविल कोर्ट के एडवोकेट, श्री रमा शंकर शुक्ल ने धन्यवाद-ज्ञापन

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

'हिंदी में व्यंग्य-लेखन' विषयक एक दिवसीय



22 जून, 2022 को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में 'हिंदी में व्यंग्य-लेखन' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने अपना



स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने विद्यार्थियों के लिए व्यंग्य-लेखन पर बात करते हए कहा ''मॉरीशस हिंदी साहित्य का अध्ययन माध्यमिक पाठशालाओं

में और विश्वविद्यालयी स्तर पर किया जाता है। माध्यमिक पाठशाला में विद्यार्थी कहानी, नाटक और उपन्यास पढ़ते हैं और विश्वविद्यालयी स्तर तक पहँचने पर वे साहित्य के अन्य रूपों से अवगत होते हैं और व्यंग्य विधा का अध्ययन करते हैं। इस कार्यशाला के माध्यम से व्यंग्य-लेखन में उनका ज्ञान बढेगा।''



इस अवसर पर भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव, श्रीमती सुनीता पाहजा ने अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि ''व्यंग्य, साहित्य की ऐसी विधा है, जिसका

आलोचनात्मक प्रभाव होता है। व्यंग्य उस पर चोट करता है, जो गलत होता है और सही बात की तरफ़ इशारा करता है।"



कार्यशाला के अतिथि वक्ता, स्थापित हिंदी लेखक, संपादक एवं विख्यात व्यंग्यकार, डॉ. प्रेम जनमेजय ने अपना वक्तव्य प्रस्तृत करते हुए 'व्यंग्य की अवधारणा'

विषय पर बात की। उन्होंने व्यंग्य को चेतना के रूप में परिभाषित किया और कहा कि 'व्यंग्य मनुष्य के सुशिक्षित होने और भाषा की शक्ति का परिचायक है। व्यंग्य बौधिक चेतना का शंखनाद है। जिसे व्यंग्य की समझ न हो, व्यंग्य उसके लिए नहीं है। व्यंग्य एक हथियार है, जो व्यक्ति और परिस्थिति के अनुसार अभिव्यक्त होता आया है और अपने स्वरूप को विकसित करता आ रहा है। पहले तो व्यंग्य मात्र एक शब्द-शक्ति था, परंतु वह वाक्यों, प्रसंगों तथा अब एक रचना के रूप में सब के समक्ष आया है।"



शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रबंधक मंत्रालय (शिक्षा), श्री निरंजन बिगन ने अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा ''जिस

सादगी से व्यंग्य को प्रस्तुत किया जाता है, उसका प्रभाव सीधे हृदय पर पड़ता है। व्यंग्य मीठी छुरी की तरह है। " उन्होंने व्यंग्य विधा को मनुष्य के मस्तिष्क को प्रभावित करने वाली शैली के रूप में परिभाषित किया।



कार्यक्रम के दौरान मॉरीशस विश्वविद्यालय एवं महात्मा गांधी संस्थान के बी.ए. हिंदी - प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों सुश्री खुशबू नौजी, सुश्री मीनाक्षी देवी दोमा, सुश्री संजना जद् एवं सुश्री भाव्यशी रामेसर इमरित ने व्यंग्यकार, डॉ. प्रेम जनमेजय द्वारा रचित 'हिंदी माथे की बिंदी' नामक लघुकथा का नाट्य



रूपांतरण प्रस्तुत किया, जिसने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।



बी.ए. हिंदी - द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों ने व्यंग्य प्रस्तुति के माध्यम से डॉ. प्रेम जनमेजय की व्यंग्य-प्रतिभा को दर्शाया। श्री लविश सिंह रोघुवा, श्री युगम कुमार रामदिन एवं सुश्री श्रावणी बिहारी ने 'वह गंध कहाँ है' शीर्षक व्यंग्य की सुंदर प्रस्तुति की।



बी.ए. हिंदी - तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों सुश्री पूर्वा देवी रामदिन, सुश्री हेश्वरी देवी राजकुमार, सुश्री भारती दुहोनारायण तथा सुश्री परीना परसोनुला ने डॉ. प्रेम जनमेजय द्वारा रचित व्यंग्य नाटक 'सोते रहो' की प्रस्तुति की।

विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने उद्घाटन-सत्र के समापन में आभार-ज्ञापन किया।

कार्यशाला के द्वितीय सत्र और तृतीय सत्र में डॉ. प्रेम जनमेजय ने 'हिंदी में व्यंग्य-लेखन - स्वरूप एवं परंपरा' विषय पर बात करते हए कहा कि ''व्यंग्य का मूल स्वर विरोध होता है। जिस रचना में विरोध नहीं है. वह व्यंग्य रचना नहीं है। व्यंग्य एक विवशताजन्य हथियार है। सामाजिक आदर्शों से युक्त, गहन चिंता सम्पन्न तथा दिशा युक्त अच्छी रचना लिखना कठिन होता है। मानव समाज को एक अच्छी दिशा देना तथा समय की विसंगतियों को उद्घाटित कर आलोचनात्मक दृष्टि से दिशा युक्त सार्थक व्यंग्य रचना एक अच्छी रचना होती है।" उन्होंने संस्कृत साहित्य, हिंदी साहित्य एवं पाश्चात्य साहित्य में व्यंग्य की उत्पत्ति पर बात की। उन्होंने उपयुक्त व्यंग्यकार की परिभाषा देते हए कहा ''व्यंग्यकार की सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वह कैसे आलोचनात्मक तथा आक्रोशपूर्ण भाव को प्रघात चिकित्सा में परिवर्तित करे।" उन्होंने हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों में विद्वानों को उद्धत करते हुए व्यंग्य-लेखन के बदलते स्वरूप को रेखांकित किया।





द्वितीय सत्र का मंच-संचालन महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग की व्याख्याता, डॉ. तनुजा पदारथ-बिहारी ने किया तथा तृतीय सत्र का मंच-संचालन महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग की वरिष्ठ व्याख्याता, डॉ. लक्ष्मी झमन ने किया।

तृतीय सत्र 'व्यंग्य का मनोविज्ञान' विषय पर तथा चतुर्थ सत्र 'हिंदी में व्यंग्य लेखन - भाषा एवं शैली' पर आधारित रहा।

डॉ. जनमेजय ने 'व्यंग्य का मनोविज्ञान' विषय पर बात करते हुए कहा कि ''पहले दैनिक जीवन में व्यंग्य का प्रयोग हुआ, फिर लोक जीवन में आया। तत्पश्चात् साहित्य में व्यंग्य का प्रयोग हुआ। मनोविज्ञान तो व्यंग्यकार का ही होगा, व्यंग्य तो शब्दों में उस मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति मात्र है। फिर पाठक का मनोविज्ञान आता है कि वह कैसे व्यंग्य को ग्रहण करता है।"

चतुर्थ सत्र के अंतर्गत डॉ. जनमेजय ने 'हिंदी में व्यंग्य-लेखन - भाषा एवं शैली' पर अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि "भाषा का कलात्मक रूप वह साहित्य रचना में भाव को आगे विकसित भी करता है। पश्चिमी साहित्य में व्यंग्य की भाषा का सबसे पुराना रूप ग्रीक और रोमन साहित्य में मिलता है, जिसे मिलिपियन शैली कहा जाता है। पहले तथा आज भी मिलिपियन शैली व्यंग्य के लिए प्रयोग में आने वाली उग्र भाषा पद्धति है। तब धीरे-धीरे व्यंग्य की भाषा सभ्य बनने लगी।"



चतुर्थ सत्र का मंच-संचालन महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग की वरिष्ठ व्याख्याता, डॉ. अलका धनपत ने किया।

साथ ही, सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने समापन-वक्तव्य देते हुए डॉ. प्रेम जनमेजय द्वारा दिए गए विचारों को पुन: प्रस्तुत किया - "व्यंग्य हथियार है, आप हथियार बंदर के हाथ में देंगे, तो वह आपको काट देगा, हथियार सैनिक के हाथ में भी होता है और हथियार के हाथ में भी होता है, बुद्धिमान व्यक्ति सैनिक बनकर हथियार का प्रयोग करता है।" आगे उन्होंने कहा "व्यंग्य जहाँ आरम्भ होता है, वही समाप्त होता है। व्यंग्य रचना नाविक के लिए तीर के समान है। व्यंग्य को आक्रात्मक बनाने वाली, उसकी भाषा है तथा व्यंग्य की भाषा बहते नीर की तरह है। व्यंग्य में एकार्थ नहीं होता अन्यार्थ होता है। व्यंग्य पाठक को विरोध का संस्कार देता है।" उन्होंने कार्यशाला की सार्थकता स्पष्ट की।



महात्मा गांधी संस्थान की निदेशिका, डॉ. विद्योत्मा कुंजल ने अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि "व्यंग्य-लेखन अपने विचार को व्यक्त करने

का एक सफल व सशक्त माध्यम बन गया है। व्यंग्य के माध्यम से कहानी, कविता या किसी भी विधा का प्रभाव बढ़ जाता है।"



महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग की अध्यक्षा तथा वरिष्ठ व्याख्याता, डॉ. अंजलि चिंतामणि ने कार्यशाला में उठाए गए

बिंदुओं का समाहार प्रस्तुत किया और कहा कि ''व्यंग्य की इस कार्यशाला का सभी ने लाभ उठाया।''



'हिंदी में व्यंग्य-लेखन' विषयक एक दिवसीय कार्यशाला के दौरान आयोजित परिचर्चा-सत्रों के अंतर्गत डॉ. प्रेम जनमेजय ने विद्यार्थियों द्वारा पूछे



गए प्रश्नों को सुलझाया। साथ ही, कई शिक्षकों ने भी प्रश्न किए, जिनके उत्तर डॉ. प्रेम जनमेजय द्वारा प्रस्तुत किए गए।

कार्यशाला के अंत में प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। डॉ. अलका धनपत ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

एक शाम, हिंदी व्यंग्य के नाम



23 जून, 2022 को विश्व हिंदी सचिवालय ने भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में 'एक शाम, हिंदी व्यंग्य के नाम' का आयोजन किया। कार्यक्रम का आयोजन शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय और भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्वावधान में तथा कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय और महात्मा गांधी संस्थान के सहयोग से किया गया। समारोह का आरम्भ दीप-प्रज्ज्वलन से हुआ।



समारोह के आरम्भ में विश्व सचिवालय उपमासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने अपना स्वागत वक्तव्य दिया और कहा कि 'मनुष्य के जीवन को

निखारने और समाज का हित करने के उद्देश्य से उपहास और आलोचना को साथ लेकर हिंदी में व्यंग्य लिखा जाता है। आज के कार्यक्रम में इस मंच से भारत और मॉरीशस के साहित्यकारों की प्रतिनिधि व्यंग्य-रचनाएँ प्रस्तुत की जाएँगी।"

विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य, मॉरीशसीय हिंदी साहित्यकार और हिंदी संगठन के अध्यक्ष, डॉ. उदय नारायण गंगु ने 'मेरे पुरखों की



भाषा' व्यंग्य-काव्य का पाठ किया। इस व्यंग्य में उन्होंने हिंदी भाषा पढने से संबंधित पुरखों के वचन को स्मरण करने का प्रोत्साहन दिया।



मॉरीशस के वरिष्ठ साहित्यकार, डॉ. बीरसेन जागासिंह ने अपनी व्यंग्य रचना 'समझौता का फेर' का पाठ किया। इस व्यंग्य रचना

में इस बात की पुष्टि की गई है कि समझ-समझकर यदि न समझेंगे, तो समझ का फेर होता है तथा नासमझी का परि<mark>णा</mark>म भुगतना ही पड़ता है।

स्थापित मॉरीशसीय साहित्यकार, श्री रामदेव ध्रंधर ने सर्वप्रथम अपने विचार रखते हुए युवा



पीढ़ी को व्यंग्य की रचना करने हेत् प्रेरित किया और कहा ''यदि हमारे विद्यार्थी व्यंग्य विधा में रुचि लेकर व्यंग्य लिखें, तब मॉरीशस का हिंदी साहित्य अधिक

परिष्कृत होगा।" तत्पश्चात् उन्होंने अपनी दो रचनाओं 'अटकलबाज़ी में भगवान' एवं 'पांचाली का चीरहरण' का पाठ किया।



स्थापित हिंदी लेखक, डॉ. हेमराज सुन्दर ने अपनी दो व्यंग्य रचनाओं 'पॉकेटमार संतों से सावधान' और 'यह क्या बात हुई जनाब?' का पाठ किया। उन्होंने व्यंग्य के

<mark>माध्यम से प</mark>ॉकेटमार संतों के प्रति सावधानी बरतने का परामर्श दिया और अपनी दुसरी रचना में व्यंग्यात्मक शैली में कटाक्ष किया।



स्थापित हिंदी लेखिका. श्रीमती कल्पना लालजी ने 'कोविड' व्यंग्य हाइकु का पाठ किया। इसमें उन्होंने 'कोविड' महामारी के प्रभाव को दर्शाया।



नवोदित हिंदी लेखक, डॉ. सोमदत्त काशीनाथ ने 'भैया, परिस्थिति बदल गई' शीर्षक पर व्यंग्य कविता का पाठ

किया। इसमें उन्होंने परिस्थिति के साथ लोगों के बदलते स्वभाव का बखान किया।



नवोदित हिंदी रचनाकार, सुश्री प्रेरणा आर्यनायक ने 'अब कहीं न आना-जाना, ऑनलाइन हो गया ज़माना' का पाठ किया। इसमें उन्होंने

ऑनलाइन होने की प्रवृत्ति के कारण परिस्थिति में आए बदलाव को रेखांकित किया।



अंतिम प्रस्तुति डॉ. प्रेम जनमेजय की रही। उन्होंने अपनी व्यंग्य-रचना 'कबीरा क्यों खड़ा बाज़ार में' का पाठ किया, जिसमें उन्होंने कबीरा को मास्क लगाने तथा उतारने

से जोड़ा है। साथ ही, उन्होंने व्यंग्य में बाज़ारवाद पर भी अपने विचार व्यक्त किए।



कार्यक्रम में आध्निक हिंदी साहित्य के जनक, श्री भारतेंद् हरिश्चंद्र द्वारा रचित 'अंधेर नगरी चौपट राजा' का मंचन किया गया। वाक्वा रंग भूमि कला मंदिर के कलाकारों, श्री राजेश्वर सितोहल, श्री मृणाल घुराह एवं श्री कृष्णानंदसिंह रामधनी ने व्यंग्य नाटक का सुंदर मंचन किया।



बृंदाबन मल्टिपर्पोस एजुकेशनल एसोसिएशन की अध्यापिका तथा छात्र सुश्री कविता गोबुदन, श्री रेशव लखन, सुश्री मीठी किष्टो तथा सुश्री खुशी खेद् ने हिंदी व्यंग्यकारों की दसरी पीढ़ी में प्रसिद्ध श्री हरिशंकर परसाई कृत 'समझौता' व्यंग्य रचना का मंचन किया।

डॉ. राकेश श्रीकिस्न तथा श्री जयगणेश दाउसिंह ने भारतीय व्यंग्यकारों में तीसरी श्रेणी में आने वाले श्री



नरेंद्र कोहली द्वारा रचित 'रामल्भाया की परेशानी' का सुंदर मंचन किया।



श्री इंद्रसेन आनंद घनशाम तथा श्री प्रकाश हरनोम ने व्यंग्यकारों में तीसरी पीढ़ी में आने वाले श्री हरिश नवल द्वारा रचित 'वर्तमान समय और हम' का मंचन किया। इस व्यंग्य-रचना की प्रस्तृति द्वारा लोगों को ईमानदारी प्राप्त करने की सीख दी गई।



समारोह के दौरान श्री विशाल मंगरू (गायक, एम. जी.आई.), श्री आनंद चत्तू, श्री अरविंद भजन, श्री यशीराज सन्मुख्या एवं श्री विशाल नापोल (यंत्र-वादक), डॉ. शेलाना रामडू (नृत्य-निर्देशक, अध्यक्षा, सी.पी.डी., एम.जी.आई.), श्रीमती मनीषा द्वारका, श्रीमती चित्रा मित्आ, श्रीमती मिता बिहारी, श्रीमती ज़बीन रामगुलाम लोबिन, श्रीमती अरुणा देवी चत्तू और श्रीमती शकीला हुलाश (नृत्य कलाकार, एम.जी.आई.) ने भारतीय व्यंग्यकारों में प्रसिद्ध, श्री गिरीश पंकज द्वारा रचित गज़ल की रमणीय प्रस्तुति दी।



श्री रितेश मोहाबीर, सुश्री पूजा रामदावोर तथा सुश्री रक्षिता रामधारी ने भारत के प्रख्यात संपादक, लेखक और व्यंग्यकार, डॉ. प्रेम जनमेजय कृत 'क्यों चुप तेरी महफ़िल में?' व्यंग्य नाटक का मंचन किया। इस मंचन द्वारा प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव तथा समय के अभाव पर बल दिया गया।

इस अवसर पर डॉ. प्रेम जनमेजय एवं श्रीमती आशा कुंद्रा जनमेजय के हाथों डॉ. उदय नारायण गंगू, डॉ.



बीरसेन जागासिंह, श्री रामदेव धुरंधर, डॉ. हेमराज सुन्दर, श्रीमती कल्पना लालजी, डॉ. सोमदत्त काशीनाथ एवं सुश्री प्रेरणा आर्यनायक को उनके व्यंग्य पाठ हेतु प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए और डॉ. जनमेजय की व्यंग्य पत्रिका 'व्यंग्य यात्रा' की एक प्रति भी प्रदान की गई। साथ ही, सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी को भी सम्मानित किया गया।



प्रमाण-पत्र वितरण की शृंखला को आगे बढ़ाते हुए व्यंग्य नाटक मंचन के कलाकारों को भी पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम के अंत में सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

कार्यशाला/संगोष्ठी/ गोष्ठी/वेब संगोष्ठी/ काव्य गोष्ठी/संवाद/ रचना-पाठ/चर्चा

साँची में बृहद हिंदी कार्यशाला



10 जून, 2022 को एन.एच.डी.सी. निगम मुख्यालय श्यामला हिल्स के साँची सभागृह कक्ष में बृहद हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर, डॉ. निलिम्प त्रिपाठी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आध्यात्मिक चेतना उसी व्यक्ति में विकसित होती है, जो प्रसन्न रहना जानता है और प्रसन्नता प्रत्येक व्यक्ति का आंतरिक स्वभाव है। जैसे सत्य व्यक्ति का अंतर्निहित स्वभाव है, उसे कहीं बाहर सीखना नहीं होता, वह व्यक्ति के अंदर विद्यमान रहता है, झूठ बोलने से दुख पीड़ा

और अवसाद होता है, लेकिन सत्य बोलने से मन प्रसन्न होता है। प्रथम सत्र में श्री उमेश कुमार सिंह, निदेशक विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन योजना ने 'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में राजभाषा हिंदी की उपादेयता' पर व्याख्यान दिया।

द्वितीय सत्र में डॉ. निलिम्प त्रिपाठी ने व्यक्तित्व के परिमार्जन में अध्यात्म ज्ञान पर अत्यंत लोकप्रिय उद्धोधन दिया।

तृतीय सत्र में हिंदी भवन के निदेशक डॉ. जवाहर कनार्वट ने 'राजभाषा कार्यान्वयन में तकनीकी अनुप्रयोग' विषय पर संबोधन दिया तथा कार्यक्रम के चतुर्थ सत्र में भोपाल के डॉ. आनन्द कृष्ण ने 'राजभाषा कार्यान्वयन में व्यावहारिक अनुवाद' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

साभार : दैनिक चित्रकूट ज्योति पत्रिका से

उज्जैन में अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी



17 मई, 2022 को विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन की हिंदी अध्ययनशाला, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला और गांधी अध्ययन केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में 'प्रवासी साहित्य : सरोकार और सम्भावनाएँ' विषय पर केंद्रित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी की अध्यक्षता, कुलपित प्रो. अखिलेश कुमार पांडेय ने की। कार्यक्रम के अतिथि वक्ता केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली के सहायक निदेशक, डॉ. दीपक पाण्डेय एवं डॉ. नूतन पाण्डेय, महात्मा गांधी संस्थान मोका, मॉरीशस से डॉ. अंजिल चिंतामणि, नॉर्वे के प्रवासी हिंदी लेखक श्री सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक', विक्रम विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष, प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, नई दिल्ली, प्रो. गीता नायक एवं डॉ. जगदीश चंद्र शर्मा रहे।

डॉ. अंजलि चिंतामणि ने कहा कि 'मॉरीशस में भारत के संस्कार आज भी जीवित हैं, जो प्रवासी साहित्य में एक विशेषता के रूप में उतरे हैं। एक साथ सबको लेकर चलने और सुख-दुख में सबका साथ देने की भावना, वहाँ आज भी विद्यमान है। अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'हम प्रवासी' और अन्य रचनाओं में मॉरीशस के कठिन दौर का जीवंत चित्रण मिलता है। हिंदी को दुनिया की उन भाषाओं से ऊँचा स्थान मिलना चाहिए, जिसकी वह अधिकारिणी है।" उन्होंने यह भी बताया कि भारत सरकार ने मॉरीशस के विद्यार्थियों को टैबलेट्स उपलब्ध करवाए, जिनके माध्यम से वे तकनीकी

का ज्ञान अर्जित करने के साथ हिंदी के प्रयोग में भी दक्ष हो रहे हैं।

कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार पांडेय ने अपने विचार व्यक्त करते हए कहा कि "भारतीय संस्कृति की सुगंध प्रवासी भारतीयों के लेखन में दिखाई देती है। युवा पीढ़ी को उसे पढ़कर प्रेरणा लेनी चाहिए।" डॉ. दीपक पाण्डेय ने कहा कि प्रवासी साहित्य अत्यंत समद्ध है। वर्तमान में गिरमिटिया देशों के अलावा विश्व के कोने-कोने में प्रवासी साहित्य लिखा जा रहा है। उन्होंने त्रिनिदाद और गयाना में शर्तबंदी प्रथा के तहत वहाँ ले जाए गए लोगों की चर्चा करते हुए कहा कि "आज भी उनके मन में भारत और हिंदी के प्रति गहरा अनुराग है। कबीर की साखियों का उनके जीवन पर गहरा असर है।" डॉ. नृतन पाण्डेय ने कहा कि प्रवासी भारतीय सही अर्थों में भारत के सांस्कृतिक राजदूत हैं, जो यहाँ की संस्कृति को दुनिया के अलग-अलग हिस्सों तक पहुँचा रहे हैं।

कुलानुशासक प्रो. शैलेंद्रकुमार शर्मा ने कहा कि प्रवासी साहित्य नए दौर का साहित्यिक विमर्श है, किंतु इसके बीज दशकों पहले महात्मा गांधी और प्रेमचंद के लेखन में दिखाई देते हैं। प्रवासी साहित्य आज एक लोकप्रिय और सर्वस्वीकार्य अवधारणा है। प्रवासी साहित्य को भारतीय संस्कृति और अस्मिता के साथ जोड़कर देखने के साथ उनके बीच मौजूद जैविक संबंधों को और सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है।

श्री सुरेशचंद्र शुक्ल शरद आलोक ने कहा कि हिंदी भारतीयता की पहचान है तथा प्रवासी साहित्य, वैश्विक साहित्य है। यह विदेशों में बसे भारतवंशी लेखकों का साहित्य है।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने कहा कि युवा पीढ़ी को प्रवासी साहित्य को पढ़ने की आदत डालनी चाहिए। प्रो. गीता नायक ने भारतीय संस्कृति की विशेषता पर बात करते हुए कहा कि वह कभी मिटती नहीं है। उसमें लचीलापन और विविधता है। डॉ. जगदीश चंद्र शर्मा ने कहा कि प्रवासी साहित्य हिंदी की सृजनात्मकता का बृहद आयाम है, जिसमें विदेशों में बसे भारतवंशियों के सुख-दुख, तनाब और संघर्ष के साथ मातृभूमि के प्रति अपनत्व की अभिव्यक्ति मिलती है।

डॉ. दीपक पाण्डेय का फ़ेसबुक पृष्ठ

'दो देश दो कहानियाँ (भाग -5)' : 107वीं संगोष्ठी का आयोजन

4 जून, 2022 को लंदन स्थित 'वातायन मंच' के तत्वावधान में हिंदी राइटर्स गिल्ड तथा वैश्विक हिंदी परिवार के सहयोग से 'दो देश दो कहानियाँ (भाग -5)' की 107वीं संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्रिटेन से श्री महेंद्र दवेसर तथा दुबई से आरती लोकेश को अपनी-अपनी कहानियों का पाठ करने का अवसर मिला तथा उन कहानियों पर







कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ लेखक और संपादक डॉ. हरीश नवल ने टिप्पणियाँ कीं।

सर्वप्रथम कार्यक्रम की प्रस्तोता आस्था देव ने दोनों कहानीकारों का परिचय कराया। आस्था देव ने उद्घोषक और नाट्यकर्मी कृष्ण टंडन जी को महेंद्र दवेसर की कहानी को वीडियो के माध्यम से स्नाने का आग्रह किया। इस कहानी में कथाकार ने मन के भीतर उठ रही सुनामी को प्रतीकात्मक रूप में प्रतिबिंबित किया है। यह कहानी मानवीय संवेदनाओं के अनेकानेक बिंदुओं को रेखांकित करती है। समीक्षक ने कहा कि यह कहानी हतप्रभ करने वाली है, जिसमें शेफाली मित्रा और उसकी सखी सुंदरी के मन में भीतर उफ़ान ले रही सुनामी को भौगोलिक सुनामी की भाँति ही उद्वेलित करने वाली सुनामी के रूप में चित्रित किया गया। उन्होंने कहा कि यह कहानी इतिहास की भाँति हमें यथार्थ का आभास करा रही थी, न कि कल्पना-लोक में विचरण करा रही थी। इसके अतिरिक्त, यह कहानी मज़हब की तोड़ने और जोड़ने वाली मानसिकता पर भी प्रकाश डालती है। डॉ. हरीश नवल ने इतनी अच्छी कहानी के लिए कथाकार को साध्वाद प्रेषित किया।

कथाकार आरती लोकेश ने दूसरी कहानी 'मोह का ताना-बाना' का पाठ किया। यह कहानी घरेलु और सामाजिक स्त्री के हर पक्ष पर ध्यान केंद्रित करती है। विवाहार्थ लड़की के विवाह-बंधन में बंधने की चाह और विवाहोपरांत गृहस्थी के लफ़ड़ों-झटकों की व्यस्तता में अपनी अस्मिता पहचानने की इच्छा इस कहानी का ताना-बाना बुनती है। कहानी स्त्री मनोविज्ञान को पूर्णतया में रेखांकित करती है। मित्रता, मोह, मातृत्व, पड़ोस, सखी-धर्म, रिश्ता, अबोध बच्ची की युवती बनकर दुल्हन बनने तक की यात्रा आदि जैसे रोचक विवरणों से यह कहानी भरी पड़ी है। समीक्षक ने कहा कि यह हमारे आसपास की कहानी है, जो प्रत्येक घर की कहानी हो सकती है। कहानी छोटी-छोटी स्त्री-सुलभ क्रियाओं से बुनी जाती है और एक बड़े फलक पर स्त्री के संसार का चित्रांकन करती है। समीक्षक ने कहा कि कहानी में नाटकीयता दिलचस्प रूप लेती

अंत में सुश्री दिव्या माथुर ने उपस्थित श्रोताओं को टिप्पणियों के लिए आमंत्रित किया और उनकी विशिष्ट बातों को रेखांकित किया। आस्था देव ने दोनों कहानीकारों, समीक्षकों तथा श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया।

साभार : वी विट्नस न्यूज़.कॉम

वातायन प्रवासी संगोष्ठी 'सन्दर्भ मुहावरे : आओ तिल का ताड बनाएँ

22 मई, 2022 को वातायन मंच के तत्वावधान में वातायन प्रवासी संगोष्ठी 'सन्दर्भ मुहावरे : आओ तिल का ताड़ बनाएँ का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी के प्रस्तोता, बरेली के साहित्यकार श्री राहुल अवस्थी ने बताया कि यह संगोष्ठी हिंदी महावरों और लोकोक्तियों पर आधारित है। संगोष्ठी की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी निदेशालय की निदेशक सुश्री बीना शर्मा ने की। डॉ. मधु चतुर्वेदी ने कहा कि लोकोक्तियों और मुहावरों के माध्यम से सम्बंधित देश की सामाजिक पृष्ठभूमि को जाना जा सकता है। इनसे उस स्थान की परंपराएँ और मान्यताएँ परिलक्षित होती हैं। मुहावरे किसी घटना के होने पर बेसाख्ता मुँह से निकल जाते हैं, जिनका हम बोलचाल में वरण कर लेते हैं। तद्परांत शैल अग्रवाल ने कहा कि मुहावरे गढ़े नहीं जाते हैं, बल्कि स्वयमेव गढ़ जाते हैं। उन्होंने अंग्रेज़ी भाषा और हिंदी भाषा के मुहावरों का तुलनात्मक ब्यौरा प्रस्तुत किया, जिनके निहितार्थ पर डॉ. चतुर्वेदी ने प्रकाश डाला।

संगोष्ठी के अगले चरण में वातायन मंच की अभिभावक सुश्री दिव्या माथुर से अनुरोध किया गया कि वे कुछ मुहावरे उद्धृत करें। आस्था देव ने कुछ मुहावरों का वाचन किया, जिसपर डॉ. चतुर्वेदी ने अपने विचार दिए। उन्होंने कहा कि मुहावरे और लोकोक्तियाँ ही सुक्तियाँ बन जाती हैं।

डॉ. बीना शर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि जिस तरह टकसाल में सिक्के गढ़े जाते हैं, उसी तरह इस कार्यक्रम में मुहावरे गढ़े गए हैं। किन्तु जब ये मुहावरे प्रचलन में आ जाएँ, तब हमें समझना चाहिए कि हमारे मुहावरे सफल हुए। ये मुहावरे किन्हीं प्रसंगों को सार्थक बनाते हैं। बहरहाल, जिन सन्दर्भों में मुहावरों का सृजन हुआ, क्या उन्हीं सन्दर्भों को फिर से जीया जा सकता है? यदि नहीं जीया जा सकता, तो वे मुहावरे अलोकप्रिय होकर सामाजिक पटल से गायब हो जाएँगे। कार्यक्रम का समापन करते हुए सुश्री आस्था देव ने सभी दर्शकों एवं श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया।

साभार : वी विट्नस न्यूज़.कॉम

पटना में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

17 एवं 18 मई, 2022 को पटना में केन्द्रीय हिंदी संस्थान के तत्वावधान में साहित्य संस्कृति फ़ाउंडेशन और ए.एन. कॉलिज द्वारा 'स्वाधीन भारत में सांस्कृतिक पुनरुत्थान के आयाम' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी के विभिन्न सत्रों में संस्कृति के विभिन्न सांस्कृतिक आयामों पर चर्चा की गई।



उद्घाटन-सत्र की अध्यक्षता बिहार के विधान परिषद् सदस्य श्री संजय पासवान ने की। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री अनिल जोशी ने संस्कृति के विभिन्न आयामों पर चर्चा करते हुए विशेष रूप से संस्कृति के सनातन स्वरूप को रेखांकित करने का प्रयास किया। गोष्ठी में श्री राहुल देव, श्री नारायण कुमार, श्री मनोज श्रीवास्तव, प्रो. बीना शर्मा, प्रो. सत्यकेतु सांकृत, श्रीमती अलका सिन्हा, डॉ. जवाहर कर्नावट, श्री राजकिशोर, श्री राकेश योगी, डॉ. आशीष कंधवे, श्री शिवनारायण और श्री वीरेन्द्र यादव आदि विद्वानों ने भाग लिया।

दूसरे सत्र के मुख्य अतिथि श्री मनोज श्रीवास्तव थे। भाषा संबंधी सत्र में विरष्ठ पत्रकार श्री राहुल देव, श्री नारायण कुमार, डॉ. जवाहर कर्नावट, श्री अनिल जोशी व श्री वीरेन्द्र यादव ने भाग लिया। इस सत्र में श्रीमती अलका सिन्हा, प्रो. सत्यकेतु सांकृत और नई धारा के संपादक श्री शिवनारायण ने अपने विचार रखे और श्रोताओं की जिज्ञासाओं को भी शांत किया। गोष्ठी के अंतिम सत्र की अध्यक्षता केन्द्रीय हिंदी संस्थान की निदेशक प्रो. बीना शर्मा ने की। इस सत्र में डॉ. आशीष कंधवे और श्री अशोक ज्योति का व्याख्यान भी प्रभावी रहा। प्रो. बीना शर्मा द्वारा विशिष्ट अतिथियों और प्रतिभागियों को स्मृति चिह्न भी वितरित किए गए।

साभार : श्री अनिल जोशी का फ़ेसबुक पृष्ठ

हैदराबाद में बृहद साहित्यिक गोष्ठी



28 मई, 2022 को ए.जी.आई. हैदराबाद चैप्टर और साहित्य गरिमा पुरस्कार हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में एक विशेष बृहद् साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह गोष्ठी हिंदी की लब्धप्रतिष्ठित पत्रिका 'वैचारिकी' के पूर्व संपादक शंकर लाल पुरोहित जी के निवास ग्रीन एवेन्यू में आयोजित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अहिल्या मिश्र ने की। कार्यक्रम की





शुरुआत शंकर लाल पुरोहित व उनके ज्येष्ठ पुत्र सुनील कुमार पुरोहित को सम्मानित करने से हुआ। इसके बाद डॉ. अहिल्या मिश्र के कर कमलों द्वारा सुनील कुमार पुरोहित की पुस्तक का विमोचन किया गया। इसके पश्चात् काव्य-पाठ का आयोजन किया गया, जिसमें हैदराबाद की लेखिका मोहिनी गुप्त ने 'भोर के पहले उजाले की किरण मन में सजाकर' सुंदर कविता का पाठ किया। श्री विनोद गिरी अनोखा ने भोजपुरी में अपनी रचना का पाठ

श्री संतोष रजा गाजीपुरी ने माता-पिता पर समर्पित अपनी गज़लों की सुंदर प्रस्तुति की। शिल्पी भटनागर ने अपनी रचना 'घर याद आता है मुझे' और 'हमारी कलम' नामक सशक्त रचनाओं का पाठ किया। तत्पश्चात् डॉ. भरत विजय पुरोहित ने सुनील कुमार पुरोहित द्वारा लिखित खंड काव्य-पाठ किया। संगीता महारिया ने भी अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। अंत में डॉ. अहिल्या मिश्र ने अपनी सशक्त रचना 'हॉं जीवन तुम, हॉं तुम...' पढ़ी। केंद्रीय हिंदी संस्थान के प्रभारी व निदेशक श्री गंगाधर ने भी अपने अमूल्य विचारों को सबके सामने रखा। धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. निर्मला पुरोहित तथा कार्यक्रम का संचालन डॉ. अहिल्या मिश्र ने किया।

साभार : तेलंगाना समाचार.ऑनलाइन

शिमला में दूसरी 'निर्मल वर्मा स्मृति यात्रा' और गोष्ठी



3 अप्रैल, 2022 को शिमला के रिज मैदान टका बैंच में स्थित बुक कैफ़े के प्रांगण में साहित्य मंच द्वारा दूसरी 'निर्मल वर्मा स्मृति यात्रा' का आयोजन किया गया, जिसमें 35 लेखकों सहित कई शोध छात्रों, मीडियाकर्मियों और स्थानीय साहित्य प्रेमियों ने भाग लिया। इस अवसर पर भज्जी हाउस में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें निर्मल वर्मा की स्मृति में लेखकों ने कई रचनाओं का पाठ किया।

गोष्ठी का आरंभ करते हुए श्री एस. आर. हरनोट ने इस यात्रा का मूल उद्देश्य बताते हुए कहा कि हम अपनी विरासत और अपने प्रख्यात लेखकों को याद करने के साथ-साथ स्थानीय लोगों और प्रदेश सरकार को भी उनके बारे में स्मरण करवाना चाहते हैं। डॉ. विद्या निधि छाबड़ा ने निर्मल वर्मा के भाई राम कुमार वर्मा द्वारा लिखा एक बहुत ही आत्मीय पत्र पढ़ा। डॉ. हेमराज कौशिक जी ने 'लाल टीन की छत' उपन्यास पर चर्चा की और उनकी रचना प्रक्रिया पर बातचीत की। भारती कुठियाला ने उनकी कहानी 'अंधेरे में' से कुछ अंश पढ़े। श्री अभिषेक तिवारी ने निर्मल वर्मा जी की पुस्तकों को लेकर चर्चा की तथा डॉ. देवेंद्र गुप्ता जी ने उनके साहित्य पर विस्तार से चर्चा की।

इस अवसर पर अनेक लेखकों, यूनिवर्सिटी और स्कूलों के छात्र-छात्राओं तथा स्थानीय साहित्य-प्रेमी उपस्थित थे। मंच का संचालन दीप्ति सारस्वत ने किया।

साभार : श्री एस. आर. हरनोट का फ़ेसबुक पष्ठ

गाज़ियाबाद में 'पेड़ों की छाँव तले रचना-पाठ' की 88वीं गोष्ठी

'पेड़ों की छाँव तले रचना-पाठ' अक्तूबर 2014 से प्रारंभ कविता-कहानी पाठ का एक अभिनव मंच है, जिसके अंतर्गत एक महीने में एक बार आखिरी रविवार को सेंट्रल पार्क, सेक्टर 4, वैशाली गाज़ियाबाद में साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन होता है। हरे-भरे पार्क में, नैसर्गिक वातावरण में, तमाम तामझाम से हटकर लेखक एक साथ आते हैं और अपनी नवोदित रचनाएँ पढ़ते हैं और प्रतिक्रियाएँ होती हैं।

25 जून, 2022 को 'पेड़ों की छाँव तले रचना-पाठ' की 88वीं गोष्ठी का आयोजन किया गया। साहित्यिक गोष्ठी के अंतर्गत गेय एवं छन्दमुक्त गीत, गज़ल और किवताओं के द्वारा समाज की ज्वलंत समस्याओं तथा रिश्तों की खटास से जुड़ी अनुभूतियों के कई रंग बिखेरे गए। वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रवासी हिंदी प्रसार अभियान के अग्रदूत तथा वर्तमान में केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष श्री अनिल जोशी के सान्निध्य में ख्यातिलब्ध गज़लकार हरिओम सिंह विमल, शायरा तूलिका सेठ, शायरा डॉ. अल्पना सुहासिनी सहित गीतकार और किव डॉ. मनोज मोक्षेन्द्र, किव डॉ. ईश्वर सिंह तेवितया तथा बृजेन्द्र नाथ मिश्र ने काव्य-पाठ किया।

विरष्ठ किव अनिल जोशी ने 'बीच बहस में' किवता का पाठ किया। गज़लकार हिरओम सिंह विमल ने कुछ मुक्तक, शेर और मुकम्मल गज़लें पढ़ीं। कवियत्री डॉ. अल्पना सुहासिनी ने अपने शेरों और गज़लों के माध्यम से कहा ''तुमने अपनी रोटी सेंकी आग लगाकर बाबूजी, हमने तो तकदीर जला ली बात में आकर बाबूजी। दीवारों में अक्सर दबकर रह जाती हैं चीखें कई, जीवन में भर दिया अंधेरा रात बताकर बाबूजी।'' तूलिका सेठ ने मानवीय रिश्तों पर चुनिन्दा शेर के साथ गज़ल का पाठ किया।

अवधी भाषा के वरिष्ठ किव श्री अवधेश सिंह ने कठिन समय में खुद को सीख देने की बात कही और गीत का गायन किया। किव डॉ. ईश्वर सिंह तेवितया ने 'माता-पिता से दूर जा रहे बच्चे' विषय पर एक गीत सुनाया। गोष्ठी को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाते हुए बृजेन्द्र नाथ मिश्र ने प्रेरक व पावस ऋतु की कोमल भाव के गीत गाए। विरष्ठ किव मनोज मोक्षेन्द्र ने एक गज़ल सुनाकर, एक गीत को प्रस्तुत किया। गोष्ठी का संयोजन व संचालन श्री अवधेश सिंह ने किया।

साभार : वी विट्नस न्यूज़.कॉम

'विदेशी विद्यार्थी और हिंदी' विषयक वेब संगोष्ठी

12 जून, 2022 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद तथा विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से 'विदेशी विद्यार्थी और हिंदी' विषयक वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अतिथियों का स्वागत श्री राजेश कुमार ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता इटली से श्री मार्को ज़ोल्ली, अंतर सांस्कृतिक प्रबंधन विशेषज्ञ ने की। इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की निदेशक प्रो. बीना शर्मा विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित थीं। कार्यक्रम में आमंत्रित विदेशी विद्यार्थी थे स्विट्जरलैंड से पास्कल ज़र्न, मॉरीशस से हेशा बिहारी, ब्रिटेन से वियलेटा भोजवानी, थाईलैंड से अंचला कंपिला, नेपाल से भरत शर्मा तथा जापान से कोई सोईचिरो। कोई सोईचिरो ने कहा कि वह केवल 3 सालों से हिंदी सीख रहा है, इसलिए हिंदी बोलने में उसे कठिनाई होती है, लेकिन उसे सीखने की रुचि है। पास्कल ज़र्न ने कहा कि 'मैं 5 साल से हिंदी सीख रहा हूँ और मेरे दो बच्चे भी हिंदी सीख रहे हैं। मेरे लिए बहुत ज़रूरी है हिंदी सीखना, क्योंकि जब मैं भारत जाता हूँ, मुझे पसंद है लोगों से हिंदी में बात करना। मुझे इतिहास और भारत की सभ्यता पसंद है। " हेशा बिहारी बताती है कि "हिंदी केवल भाषा नहीं है, वह अपने आप में ही पूरा संसार है। महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस में पढ़ाई-लिखाई केवल पुस्तक तक सीमित नहीं रही। हमने कक्षाओं में हिंदी का डिजिटालाइज़ रूप देखा, जिससे हिंदी बहुत विकसित हुई है। " वियलेटा भोजवानी ने कहा कि 'मेरा संबंध भारत और भारतीय संस्कृति के साथ बचपन से है। एक बॉलीवुड मुवी के कारण मैंने निर्णय लिया था कि मैं हिंदी सीख़्ँगी। मैं हिंदी अच्छी तरह से सीखना चाहती हूँ।" अंचला कंपिला ने कहा कि ''बचपन से ही मुझे हिंदी बहुत पसंद है, क्योंकि मैं थाईलैंड से हूँ, इसीलिए हिंदी शब्दों का उच्चारण करने में मुझे कठिनाई होती है।" भरत शर्मा ने कहा कि "हिंदी अनुवाद में मेरी रुचि है। हिंदी साहित्य को गहराई से पढ़ने की मेरी इच्छा है। नेपाल में हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थी बहत कम हैं।"





प्रो. बीना शर्मा ने कहा कि ''हम अध्यापकों का नैतिक दायित्व है कि मन के साथ सभी विद्यार्थियों से जुड़ें तथा उन्हें विषय का ज्ञान कराएँ।'' कार्यक्रम का संचालन ब्रिटेन के प्रवासी साहित्यकार, डॉ. पद्मेश गुप्त ने किया।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार के यूट्यूब से

'विदेशों में हिंदी अधिगम की चुनौतियाँ' विषयक वेब संगोष्ठी

8 मई, 2022 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद तथा विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा 'विदेशों में हिंदी अधिगम की चुनौतियाँ' विषय पर एक वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अतिथियों का स्वागत श्री राजेश कुमार ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. स्रेन्द्र गंभीर, सेवा-निवृत्त प्राचार्य, युनिवर्सिटी ऑफ़ पेन्सिल्वेनिया, अमेरिका ने की। इस अवसर पर प्रो. जिष्णु शंकर, पूर्व वरिष्ठ हिंदी व्याख्याता, युनिवर्सिटी ऑव टेक्सस और कोलंबिया युनिवर्सिटी, अमेरिका, श्री गंगाधरसिंह गुलशन सुखलाल, वरिष्ठ प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, भाषा संसाधन केंद्र, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस तथा डॉ. राम प्रसाद भट्ट, रीडर एवं सीनियर रिसर्च एसोसिएट, एशियन-अफ़्रीका इंस्टीट्यूट, हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित थे।

प्रो. जिष्णु शंकर ने कहा कि "भारतीय मूल के छात्र हिंदी भाषा को उतना समय नहीं देना चाहते, जितना अन्य विषयों को। अभिभावकों को लगता है कि बच्चे हिंदी पर ज़्यादा ध्यान देकर अपना समय बर्बाद कर रहे हैं। भारत की भाषा बहुलता के कारण हर घर में हिंदी बोली भी नहीं जाती है। ऐसी अवस्था में हिंदी का अभ्यास पुन: कठिन हो जाता है।" श्री गंगाधरसिंह गुलशन सुखलाल ने कहा कि "मॉरीशस में बैठकाओं की स्थिति कमज़ोर हो रही है। साहित्यिक, सांस्कृतिक टोलियाँ और गतिविधियाँ कक्षाओं तक ही सीमित रह गई हैं। और आजकल धार्मिक संस्थाओं की गतिविधियाँ जैसे योग की कक्षाएँ अंग्रेज़ी और क्रियोल में हो रही हैं।"

डॉ. राम प्रसाद भट्ट ने कहा कि "बहुत सारी पाठशालाओं में अब हिंदी की पढ़ाई नहीं हो रही है। युरोपीय और जर्मन छात्र केवल व्याकरण के माध्यम से भाषा को सीखना चाहते हैं।" प्रो. सुरेन्द्र गंभीर ने कहा कि 'संस्कृति को सीखने के लिए भाषा की उतनी आवश्यकता नहीं है, लेकिन भाषा को सीखने के लिए संस्कृति की आवश्यकता होती है।" कार्यक्रम का संचालन हिंदी भवन, भोपाल के निदेशक, डॉ. जवाहर कर्नावट ने किया।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार के यूट्यूब से

केदारनाथ अग्रवाल के रचना-संसार पर परिचर्चा एवं काव्य गोष्ठी



28 जून, 2022 को सूत्रधार साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था, भारत हैदराबाद द्वारा 26वीं मासिक गोष्ठी का ऑनलाइन आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में अध्यक्षा श्रीमती सरिता सुराणा ने सभी अतिथियों और सहभागियों का स्वागत किया तथा श्रीमती सुनीता लुल्ला ने सरस्वती वन्दना का पाठ किया।

प्रथम सत्र के आरंभ में श्रीमती सरिता सुराणा ने श्री केदारनाथ अग्रवाल का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि श्री केदारनाथ अग्रवाल के पिताजी अच्छे किव थे। उनसे प्रेरणा लेकर ही उन्होंने भी किवताएँ लिखनी शुरू कर दीं। इनका पहला किवता-संग्रह 'फूल नहीं, रंग बोलते हैं', परिमल प्रकाशन से प्रकाशित हुआ और उसे सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अलावा इनके दूसरे काव्य-संग्रह 'अपूर्वा' को सन् 1986 में साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया।

श्रीमती सरिता सुराणा ने उनकी प्रसिद्ध रचना 'जो जीवन की धूल चाटकर बड़ा हुआ है' का वाचन किया। परिचर्चा को आगे बढ़ाते हुए श्रीमती सुनीता लुल्ला ने कहा कि केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील लेखक थे। उन्होंने छायावाद और रहस्यवाद से प्रभावित न होकर सीधी, सरल और सहज भाषा में प्रगतिवादी कविताएँ लिखीं। ये जनता के बीच आकर अपनी बात रखना चाहते थे, इसलिए इन्होंने वकालत छोड़ दी। श्री दर्शन सिंह ने केदारनाथ जी की विभिन्न रचनाओं के उदाहरण देते हुए उनके लेखन की विशेषताओं को उजागर किया। उन्होंने कहा कि भारत ही ऐसा देश है, जिसने विश्व को ज्ञान प्रकाश दिया है।

द्वितीय सत्र में कोलकाता, पश्चिम बंगाल से श्रीमती सुशीला चनानी ने वर्षा ऋतु पर गीत प्रस्तुत किया तथा श्रीमती हिम्मत चौरिड़या ने दोहा, घनाक्षरी और कुण्डलिया छन्दों में रचित रचनाएँ प्रस्तुत कीं। सिलीगुड़ी से श्रीमती भारती बिहानी ने शब्दों की महिमा पर अपनी रचना प्रस्तुत की तथा आर्या झा ने पारसमणि जैसी सटीक और खूबसूरत नज्ञम सुनाकर सबका मन मोह लिया। डॉ. संगीता शर्मा ने 'सपनों को घोलूँ ज़रा' जैसी मनोरम रचना प्रस्तुत की और दर्शन सिंह ने 'कुछ बेचैनी-सी महसूस होती है' जैसी भावपूर्ण रचना प्रस्तुत की। श्रीमती सरिता सुराणा ने वर्तमान सम्बन्धों में आ रहे सामाजिक

परिवर्तन पर आधारित अपनी लघुकथा 'जन्मदिन' का वाचन किया। श्री प्रदीप देवीशरण भट्ट, श्रीमती किरण सिंह और श्रीमती रिमझिम झा ने भी गोष्ठी में अपनी सहभागिता दी। द्वितीय सत्र का संचालन श्रीमती सुनीता लुल्ला एवं धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. संगीता शर्मा ने किया।

साभार : तेलंगाना समाचार.ऑनलाइन

'वातायन प्रवासी संगोष्ठी' के अंतर्गत 'परिचर्चा रामायण : समुद्र-सन्दर्भ'

28 मई, 2022 को 'वातायन मंच' के तत्वावधान में 'वातायन प्रवासी संगोष्ठी' की साप्ताहिक संगोष्ठी के अंतर्गत 'परिचर्चा रामायण : समुद्र-सन्दर्भ' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आयरलैंड में भारत के राजदूत महामहिम अखिलेश मिश्र ने की।

इस संगोष्ठी में श्री मनोज श्रीवास्तव ने अपने विश्लेषणात्मक संभाषण में रामायण के एक विशेष सन्दर्भ पर विवेचन प्रस्तुत किया और महामहिम श्री अखिलेश मिश्र ने समीक्षात्मक वक्तव्य दिया। डॉ. पद्मेश गुप्त ने प्रमुख वक्ता मनोज श्रीवास्तव के बारे में विस्तृत परिचय दिया और संगोष्ठी की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। उन्होंने गायिका सुश्री विभूति शाह को आमंत्रित किया, जिन्होंने श्रीराम भजन 'पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो' का गायन किया।

मॉरीशस में रामायण सेंटर की अध्यक्षा, डॉ. विनोद बाला अरुण ने संगोष्ठी की परिचर्चा-बिंदु अर्थात् रामायण में वर्णित एक महत्त्वपूर्ण घटना का उल्लेख किया, जिसके तहत भगवान राम समुद्र से विनयपूर्ण प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी सेना को लंका पर आक्रमण करने के लिए मार्ग प्रदान करे।

उन्होंने तुलसी कृत रामचिरतमानस की चौपाई 'विनय न मानत जलिध जड़/ गए तीन दिन बीत/ बोले राम सकोप तब/भय बिन होइ न प्रीत' में वर्णित 'विनय' की बहविध व्याख्या की।

संगोष्ठी के अगले चरण में महामिहम अखिलेश मिश्र ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में बताया कि यह उनका सौभाग्य रहा है कि उन्होंने अपना अधिकतर समय सामुद्रिक सान्निध्य वाले देशों में व्यतीत किया है। समुद्र का भारत की सनातनी अस्मिता और उसकी दिव्य जीवंत छिव से गहरा संबंध रहा है। उन्होंने इस बारे में संस्कृत के कितपय ग्रंथों से समुचित उद्धरण दिए। समुद्र की विशालता मनुष्य के दार्शनिक चिंतन को भी व्यापक आयाम प्रदान करती है। समुद्र की अस्मिता का दिव्य प्रतीक वरुण है, जो, वास्तव में, परम ब्रह्म भी है। समुद्र सर्व-समावेशी भी है।

कार्यक्रम के समापन पर डॉ. जयशंकर यादव, श्री नारायण कुमार, श्री राहुल देव, प्रो. तोमियो मिज़ोकामी, श्री तेजेन्द्र शर्मा, अरुणा अजितसरिया जैसे विद्वतजनों ने रामकथा पर आधारित इस विमर्श-गोष्ठी पर अपने-अपने उद्गार



व्यक्त किए तथा इस संगोष्ठी की सूत्रधार सुश्री दिव्या माथुर को धन्यवाद दिया। श्री आशीष मिश्र ने सभी वक्ताओं, प्रतिभागी विद्वानों, ब्रिटेन के सांसद वीरेंद्र शर्मा, सूत्रधार सुश्री दिव्या माथुर एवं डॉ. पद्मेश गुप्त और कार्यक्रम से जुड़े समस्त श्रोताओं तथा दर्शकों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

साभार : वी विट्नस न्यूज़.कॉम

मॉरीशस में साहित्य संवाद की गोष्टियाँ

30 अप्रैल, 2022 को रामायण सेंटर में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक श्री बलवंत ठाक्र की अध्यक्षता में 'राम कथा की वैश्विकता : रामचरितमानस के संदर्भ में पर साहित्य संवाद की गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. विनोद बाला अरुण, डॉ. माधुरी रामधारी, श्री ज्ञानचंद धनुकचन्द, श्री गौतम लालबिहारी, श्रीमती प्रीना जीहा तिलक एवं डॉ. अंजलि चिंतामणि ने अत्यंत खोजपूर्ण वक्तव्य दिया एवं रामकथा यात्रा को पावर पोंइट प्रस्तुतियों से जोड़कर साहित्य संवाद को कभी न भुलाने वाली स्मृतियाँ बना दिया। 21 मई. 2022 को विश्व विरासत का दौरा अपने आप में छात्रों के साथ एक अनुठा अनुभव रहा। पहली बार आप्रवासी घाट में अंग्रेज़ी, फ़्रेंच और क्रियोल से हटकर पुरे दौरे का विवरण, छात्रों के प्रश्न तथा सभी श्रोताओं के साथ संवाद हिंदी भाषा में हुए। आप्रवासी घाट की शोध अधिकारी, श्रीमती किरण चत्तु जानकी ने सभी जानकारियाँ छात्रों के साथ साझा कीं और विश्व विरासत स्थल के अध्यक्ष श्री ऋषिराज कन्हाई ने सबका स्वागत किया। इस दौरे के बाद छात्रों ने लिखित रूप में प्रतिक्रियाएँ

24 जून, 2022 को लावेनीयर आर्य सभा के भवन में नवोदित सृजनकर्ताओं की ओर से 'बात किवता की' पर आधुनिक किवता पर डॉ. दिया लक्ष्मी बंधन, श्री राजवीर अवतार एवं सुश्री धिनष्ठा तान्या की प्रस्तुतियों ने किवता के सभी पहलुओं की विवेचना की और संवाद के सिलसिले को न केवल रुचिकर रखा, बल्कि श्रोताओं की जिज्ञासा को भी तुप्त किया।

साहित्य संवाद के सभी कार्यक्रमों में भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव श्रीमती सुनीता पाहूजा, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक श्री बलवंत ठाकुर एवं विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी का सान्निध्य प्राप्त हुआ और संचालन श्रीमती अंजु घरभरन ने किया।

साहित्य-संवाद की समन्वयक, श्रीमती अंजु घरभरन की रिपोर्ट

स्मृति एवं संवाद-24 : अमरकांत

7 मई, 2022 को 'वातायन मंच' के तत्वावधान में 'स्मृति-संवाद-24' का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम प्रसिद्ध कथाकार अमरकांत के रचनाकर्म, उनके व्यक्तिगत जीवन तथा साहित्यिक अवदान पर केंद्रित था। कार्यक्रम की प्रतिभागी विदुषियों प्रोफ़ेसर कुमद शर्मा और डॉ. रेखा सेठी ने अपनी संवादात्मक परिचर्चाओं में अमरकांत की रचनाधर्मिता और उनके व्यक्तिगत जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के प्रस्तोता डॉ. मनोज मोक्षेन्द्र ने संगोष्ठी का शुभारंभ करते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय की वरिष्ठ प्रोफ़ेसर कुमद शर्मा और इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय की प्रो. रेखा सेठी का स्वागत किया। प्रो. रेखा सेठी ने बताया कि अमरकांत कथाकार के रूप में प्रेमचंद की परंपरा में आते तो हैं. लेकिन अपने समय के परिवर्तित हो चुके सामाजिक परिवेश में अमरकांत अधिक प्रगतिशील और यथार्थवादी हैं। प्रेमचंद ने देश के आज़ाद होने के बाद के जो सपने देखे थे, वे तो चकनाच्र हो ही गए, क्योंकि आम आदमी की जो मजब्रियाँ थीं, आज़ादी के बाद वे और भी विभीषक रूप लेती गई। अमरकांत आज़ादी के बाद के ऐसे कथाकार थे, जिन्होंने आम आदमी की उन मजब्रियों को निकट से देखा और जीया भी। उन्होंने अमरकांत की कहानियों 'डिप्टी कलक्टरी', 'ज़िन्दगी और जोंक' और 'दोपहर का भोजन' जैसी कहानियों को उद्धत किया, जिनमें आम आदमी हाशिए की ज़िन्दगी जीता है।

प्रो. रेखा ने अमरकांत की बह और साहित्यिक विश्लेषक प्रो. कुमद शर्मा से कथाकार के अनेक अंतरंग पहलुओं पर सवाल किए, जिनका जवाब उन्होंने बड़ी आत्मीय और रुचिकर शैली में दिया। प्रो. कुमद ने बताया कि व्यक्ति के रूप में अमरकांत बिलकुल अलग नज़र आते थे, जबिक अपने लेखन में वे अत्यंत मुखर थे। हाशिए पर रह रहे आम आदमी की पीड़ा और उसकी त्रासद स्थिति को बयाँ करने में अमरकांत का कोई जवाब नहीं है। अपने समय के कथाकारों यथा - कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, शैलेश मटियानी, मन्नू भंडारी के बीच उनकी छवि बिल्कुल अलग थी। कहानी 'दोपहर का भोजन' में स्त्री पात्र सिद्धेश्वरी के माध्यम से स्त्री की त्रासद दयनीयता को चित्रांकित किया गया है, जिसे हिंदी साहित्य में हमेशा रेखांकित किया जाएगा। उनकी कहानियों में घरेलू व्यक्तियों जैसे कि उनकी पत्नी का भी अक्स आसानी से टटोला जा सकता है। उनकी कहानियाँ समाज का अर्धसत्य न होकर, पूर्ण सत्य हैं।

संगोष्ठी के अंत में डॉ. जयशंकर यादव, श्री नारायण कुमार, श्री अनूप भार्गव तथा श्री अनिल शर्मा जोशी जैसे प्रबुद्ध व्यक्तियों और साहित्यकारों ने अमरकांत को अपने संस्मरणों में संजोया। धन्यवाद-ज्ञापन श्री मनोज मोक्षेन्द्र ने किया।

साभार : वी विट्नस न्यूज़.कॉम

शिमला में दो दिवसीय कथा संवाद



2 और 3 मई, 2022 को ऐतिहासिक गेयटी सभागार में हिमालय साहित्य संस्कृति और पर्यावरण मंच शिमला द्वारा दो दिवसीय कथा संवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि प्रदेश सरकार के सचिव भाषा संस्कृति श्री राकेश कंवर द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन से किया गया।

प्रथम दिवस के प्रथम सत्र में डॉ. देवेंद्र गुप्त, डॉ. हेमराज कौशिक, डॉ. कर्म सिंह और गंगा राम राजी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्री राकेश कंवर ने इस आयोजन के लिए बधाई देते हुए हिमाचल के लेखकों को विभाग, अकादमी और प्रदेश सरकार द्वारा गेयटी थियेटर और प्रदेश भर में प्रदान की जाने वाली सुविधाओं का विस्तार से उल्लेख किया और संस्थाओं से आग्रह भी किया कि वे इन सुविधाओं का अधिक-से-अधिक उपयोग करें। उन्होंने थोड़ी निराशा भी व्यक्त की कि हिमालय मंच के अतिरिक्त कोई दूसरी संस्था सिक्रयता से अभी सामने नहीं आई है। उन्होंने कहा कि हिमाचल में जो लेखन हो रहा है, वह देश में रचे जा रहे साहित्य से किसी भी रूप में कमतर नहीं है।

पहले सत्र में चार लेखकों के आपस में संवाद और चर्चा हुई। श्री मुरारी शर्मा, श्री पवन चौहान, श्री गुप्तेश्वर नाथ उपाध्याय और भारती कुठियाला ने एक दूसरे के व्यक्तित्व और रचनाधर्मिता पर विस्तार से बात की। दूसरे सत्र में श्री गंगाराम राजी, श्री त्रिलोक मेहरा, चंद्रकांता और देवकन्या ठाकुर ने एक दूसरे के लेखन और व्यक्तित्व पर सारगर्भित परिचर्चा की। प्रथम सत्र का मंच-संचालन युवा कवि श्री दिनेश शर्मा ने किया और द्वितीय सत्र का संचालन श्री जगदीश बाली ने किया।

द्वितीय दिवस में दस कथाकारों ने कहानी-पाठ किए और अलग-अलग कहानियों पर दस आलोचकों ने समीक्षाएँ कीं। पहले सत्र की अध्यक्षता प्रो. मीनाक्षी एफ़. पॉल ने की, जिनके साथ डॉ. हेमराज कौशिक, रोशन जसवाल विक्षिप्त और दिनेश शर्मा ने मंच साझा किया। इस सत्र में डॉ. कुल राजीव पंत ने 'गोरी चींटियाँ', प्रियम्वदा शर्मा ने 'बस यहीं तक', डॉ. अक्षय कुमार ने 'हीरो', श्री पंकज दर्शी ने अंग्रेज़ी की कहानी 'द प्रायोरिटीज़' और श्री जगदीश कश्यप ने 'उम्मीद' शीर्षक से कहानियाँ

Newsletter WHS June 2022 v2.indd 11 07/06/2023 11/5

पढ़ीं, जिनपर विस्तार से समीक्षाएँ क्रमश: डॉ. देवेंद्र गुप्त, श्री गुप्तेश्वर नाथ उपाध्याय, अश्वनी कुमार, श्री जगदीश बाली और डॉ. हेमराज कौशिक ने की। सत्र का संचालन दीप्ति सारस्वत ने किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. देवेंद्र गुप्त ने की, जिनके साथ श्री गुप्तेश्वर नाथ उपाध्याय, श्री हरदेव सिंह धीमान और श्री पंकज दर्शी ने मंच साझा किया। इस सत्र में डॉ. संदीप शर्मा ने 'बूढ़ों का गाँव', श्री अनंत आलोक ने 'शीशम के पत्र', श्री सतपाल घृतवंशी ने 'कब आएगा मेरा लाल', श्री लेखराज चौहान ने 'वापसी' और कमला ठाकुर ने 'घर तो परिवार से बनता है' कहानियों का पाठ किया, जिनपर विस्तार से समीक्षात्मक टिप्पणियाँ क्रमश: डॉ. विद्या निधि छाबड़ा, डॉ. सत्य नारायण स्नेही, श्री अभिषेक तिवारी, श्री दिनेश शर्मा और दीप्ति सारस्वत ने की। दूसरे सत्र का संचालन कल्पना गांगटा ने किया।

साभार : श्री एस. आर. हरनोट का फ़ेसबुक प्रष्ठ

काव्य रचना-पाठ



17 जून, 2022 को नई दिल्ली स्थित हिंदी भवन के सभागार में न्यायालय के अधिवक्ताओं के बौद्धिक एवं सांस्कृतिक मंच 'कवितायन' तथा अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था 'उद्भव' के संयुक्त तत्वावधान में सर्वोच्च न्यायालय के विरष्ठ अधिवक्ता वी. शेखर की स्मृति में एक काव्य संध्या का आयोजन किया गया। सर्वोच्च न्यायालय के विरष्ठ अधिवक्ता और कृतित्व के स्वामी वी. शेखर का पिछले वर्ष कोरोना काल में असामयिक निधन हो गया था, इसी संदर्भ में उनकी सामाजिक सेवाओं, भारतीय भाषाओं के प्रति निष्ठा और कला एवं संस्कृति के प्रति समर्पण को देखते हुए इस समारोह का आयोजन किया

समारोह में देश-दुनिया के प्रतिष्ठित लेखक एवं शिक्षाविद् उपस्थित थे। डॉ. अशोक पांडेय मुख्य अतिथि तथा वरिष्ठ साहित्यकार-पत्रकार और व्यवसायी डॉ. बी.एल गौड़ अध्यक्ष के रूप में मंच पर विराजमान थे। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ हिंदी सेवी और अधिवक्ता दर्शनानंद गौड़, सर्वोच्च न्यायालय बार एसोसिएशन के सचिव राहुल कौशिक तथा अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका 'गगनांचल' के संपादक डॉ. आशीष कंधवे मंच पर उपस्थित थे। मंच का संचालन संयुक्त रूप से 'कवितायन' के महासचिव, चंद्रशेखर आश्री और 'उद्भव' के महासचिव, साहित्यकार व किव डॉ. विवेक गौतम ने किया। स्वर्गीय वी. शेखर की स्मृति में मुख्य अतिथि डॉ. अशोक पांडेय और अध्यक्ष डॉ. बी. एल. गौड़ के साथ-साथ विशिष्ट अतिथियों ने भी उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला, उनके साथ बीते हुए पलों और घटनाओं को पुनजीर्वित किया। इसी क्रम में सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ताओं ने अपनी-अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं, जिनमें दिलदार देहलवी, अश्विनी भारद्वाज अभिषेक अत्रेय, जितेंद्र सिंह, मोनिका कपूर, सविता सिंह, जे.बी. मुद्गल और पवन कुमार प्रमुख थे।

साभार : दैनिक भास्कर समाचार-पत्र

कवि कुमार अनुपम की कविताओं पर चर्चा

25 जून, 2022 को लंदन स्थित 'वातायन मंच' के तत्वावधान में 108वीं संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में कवि कुमार अनुपम की कविताओं पर चर्चा की गई तथा उनके श्रीमुख से कविताओं का लाभ उठाया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष एवं साहित्यकार और भाषाविद, श्री अनिल शर्मा जोशी ने की। सुश्री ऋचा जैन ने कवि अनुपम के साहित्यिक परिचय के साथ संगोष्ठी का आरंभ किया। श्री कुमार अनुपम ने बताया कि कविता की दो प्रभावशाली धाराएँ रही हैं - एक तो भक्तिकालीन तथा दूसरी स्वतंत्रताकालीन, जबिक कविता अपने सम्पूर्ण परिधान में निखरकर सामने आई। उन्होंने बताया कि कोई भी कवि अपने पुरे जीवनकाल में सिर्फ़ एक ही कविता लिखता है। अर्थात् जितनी भी कविताएँ वह लिख ले, वह एक ही कविता का विस्तार होता है। कविता मनुष्य को सुसंस्कृत बनाने का काम करती है। एक कवि अपने आत्म को बाह्य जगत से तथा बाह्य जगत को अपने आत्म से जोड़ता है और इन दोनों को जोड़ने के लिए ही वह कविताएँ लिखता है। यह बाह्य जगत, कवि को अन्यों से जोड़ता है, जिससे जुड़ना ही कविता का लक्ष्य होता है। किसी भी नए कवि की कविताओं में एक नई स्फूर्ति होनी चाहिए। एक कवि को अपनी अलौकिक संस्कृति से जुड़ना चाहिए और अपनी परम्पराओं का अनुसरण करना चाहिए।

सुश्री ऋचा जैन ने उनके द्वारा सम्पादित युद्ध के खिलाफ़ एक पुस्तक की चर्चा की, जिसमें उनकी खुद की अनूदित कोई सौ कविताएँ संगृहीत हैं। उन्होंने संग्रह की एलन गिल्सबर्ग द्वारा रचित एक कविता का पाठ भी किया, जिसका शीर्षक 'होमवर्क' है।

श्री अनिल जोशी ने अपने समीक्षात्मक भाषण में सबसे पहले किव अनुपम के काव्य-शिल्प की ओर ध्यान आकर्षित िकया। उन्होंने कहा िक अनुपम जी कला और अभिव्यक्ति के क्षेत्र में वैसी ही रुचि और दक्षता रखते हैं, जैसे कि ब्रजेन्द्र जी रखते हैं। उन्होंने कहा िक िकसी किव के निर्माण में उसके क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है और किव कहीं-न-कहीं अपने स्थान से प्रेरित होता है। उन्होंने इको-सिस्टम को बनाए रखने पर बल दिया, जिसमें कोई किव प्रादुर्भूत और विकसित होता है। उन्होंने कहा कि कुमार अनुपम ने हमारे मानसिक वितान को जो विस्तार दिया है, उसके लिए हम सभी आभारी हैं। धन्यवाद-ज्ञापन श्री मनोज मोक्षेंद्र ने तथा मंच-संचालन सुश्री ऋचा जैन ने किया।

साभार : वी विट्नस न्यूज़.कॉम

लोकार्पण

डॉ. दिनेश पाठक 'शशि' की दो पुस्तकों का लोकार्पण



24 अप्रैल, 2022 को मथरा में राष्ट्रवादी वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. दिनेश पाठक 'शशि' के लघुकथा-संग्रह 'सत्य का बोध' तथा अंग्रेज़ी बाल कहानी-संग्रह 'थैंक्यू मैम' का लोकार्पण फ़िल्म अभिनेत्री और सांसद, माननीया श्रीमती हेमा मालिनी के हाथों किया गया। लघुकथा-संग्रह 'सत्य का बोध' में जीवन के यथार्थ को उद्घाटित करने वाली उत्कृष्ट लघुकथाएँ समाहित की गई हैं तथा बाल कहानी-संग्रह 'थैंक्यू मैम' में डॉ. दिनेश पाठक 'शशि' द्वारा लिखी बच्चों का मनोरंजन एवं खेल में ज्ञानवर्धन करने वाली 6 अंग्रेज़ी बाल कहानियाँ समाहित की गई हैं। समारोह में उपस्थित वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. रमाशंकर पाण्डेय, श्री देवीप्रसाद गौड़ तथा श्रीमती अनुपमा ने पुस्तकों को अति महत्त्वपूर्ण बताया, तो सांसद महोदया के प्रतिनिधि श्री जनार्दन शर्मा ने पुस्तकों की प्रशंसा करते हुए डॉ. दिनेश पाठक 'शशि' को बधाई दी।

साभार : सेतुमाग.कॉम

श्री गिरीश चावला के लघुकथा-संग्रह 'इशिका' का लोकार्पण



12 जून, 2022 को दिल्ली के हिंदी भवन में मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा आयोजित समारोह में श्री गिरीश चावला के लघुकथा-संग्रह 'इशिका' का लोकार्पण किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता, डॉ. आशीष कंधवे ने की तथा मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार श्री सुभाष चंद्र रहे। युवा आलोचक सुश्री कोमल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं, जिन्होंने लघुकथा के विभिन्न पक्षों को रेखांकित किया और लोकार्पित लघुकथा की विशेषता पर अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री सुभाष चंद्र ने अपने बृहद् अनुभव के आधार पर बताया कि लघुकथाएँ आज हिंदी साहित्य की एक आवश्यक विधा के रूप में स्थापित हो चुकी है और संवेदना से लेकर कथ्य तक के स्तर पर उत्कृष्ट लघुकथाएँ लिखी जा रही हैं। डॉ. आशीष कंधवे ने अपने उद्बोधन में लघुकथा की सूक्ष्मता से उपस्थित लघुकथा प्रेमियों, लेखकों, साहित्यकारों को अवगत कराया। साथ ही, उन्होंने यह बताया कि लघुकथाएँ स्वाभाविक अभिव्यक्ति हैं, जो पाठकों को मानवीय संवेदना से जोड़ती है। इस अवसर पर आयोजित काव्य-पाठ में डॉ. जयप्रकाश विलक्षण के साथ अनेक कवियों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया एवं कुछ साहित्यकर्मियों को उनके योगदान के लिए सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन भावना शर्मा ने किया।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

सरिता कुमारी के कथा-संग्रह 'मैं हारी नहीं हुँ' का लोकार्पण



22 मई, 2022 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में लेखिका सरिता कुमारी के कथा-संग्रह 'मैं हारी नहीं हूँ' का लोकार्पण एवं लघुकथा गोष्ठी का आयोजन किया गया। अतिथियों का स्वागत करते हुए, सम्मेलन के प्रधानमंत्री डॉ. शिववंश पाण्डेय ने कहा कि इस कथा-संग्रह में दो मुख्य बातें हैं। पहली बात यह कि नारियाँ पराजित नहीं हुई हैं और दूसरी बात यह कि नारियाँ अपने सम्मान और अधिकार के लिए सतत संघर्ष करने में सक्षम हैं। नारी सशक्तीकरण और सम्मान के लिए संघर्ष इसके प्रमुख कथ्य हैं; मानवीय गुणों की पहचान है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि लेखिका सरिता कुमारी की कहानियाँ पाठकों में जीवन के प्रति उत्साह और आत्मविश्वास का सृजन करती हैं। इनकी कहानियों में नारी-चेतना अपने उत्कर्ष पर है। इनकी नायिकाएँ संघर्ष करती हैं, दुख सहती हैं, पर न तो जीवन से निराश होकर थकती हैं, ना हारती ही हैं।

समारोह का उद्घाटन करती हुई पटना उच्च न्यायालय की पूर्व न्यायाधीश और चाणक्य राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय की कुलपित न्यायमूर्ति, मृदुला मिश्र ने कहा कि समाज के दो वर्ग सबसे अधिक प्रताड़ित होते रहे हैं, वे हैं महिलाएँ और बच्चे। ये दोनों वर्ग सुरक्षा की दृष्टि से सर्वाधिक संकटों में रहे हैं। लोकार्पित पुस्तक में लेखिका ने इन दोनों की समस्याओं को कुशलता से रेखांकित करने की चेष्टा की है। इनकी कथाओं की महिलाएँ संघर्ष करती हुई विजयी होती दिखाई देती हैं। वरिष्ठ कथाकार और सम्मेलन के उपाध्यक्ष जियालाल आर्य ने कहा कि सरिता जी की कहानियों में सरलता भी है और रोचकता भी है, जो उत्सुकता बनाए रखती है। इस अवसर पर दूरदर्शन केंद्र, पटना की पूर्व केंद्र निदेशक रत्ना पुरकायस्था, वरिष्ठ शिक्षिका नीलम प्रभा, वरिष्ठ साहित्यकार बच्चा ठाकुर, सुप्रसिद्ध कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह तथा वरिष्ठ राजनेता मधुरेंद्र कुमार सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर आयोजित लघुकथा गोष्ठी में, सम्मेलन के उपाध्यक्ष, डॉ. शंकर प्रसाद ने 'तुम तो तुम हो', श्री ओम प्रकाश पाण्डेय 'प्रकाश' ने 'माता', डॉ. पूनम आनंद ने 'सजा', सागरिका राय ने 'अकबकाहट', डॉ. आर प्रवेश ने 'स्वाभिमान', डॉ. अर्चना त्रिपाठी ने 'ये कैसा प्रेम', डॉ. सुलक्ष्मी कुमारी ने 'ज़िंदगी', डॉ. विनय कुमार विष्णुपुरी ने 'चार दोस्त', डॉ. मनोज गोवर्द्धनपुरी ने 'सुख का अनुभव', रेखा भारती ने 'कर्मों का फल' तथा सुषमा कुमारी ने 'एक औरत की आत्मकथा' शीर्षक से अपनी लघुकथाओं का पाठ किया। धन्यवाद-ज्ञापन श्री कृष्ण रंजन सिंह ने तथा मंच-संचालन श्री सुनील कुमार दुबे ने किया।

साभार : डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

लेखिका शालिनी अग्रवाल के दो काव्य-संग्रहों का लोकार्पण



28 अप्रैल, 2022 को राजस्थान चेंबर ऑव कॉमर्स में लेखिका शालिनी अग्रवाल के दो काव्य-संग्रहों 'सुकून की नज़्में' और 'मेरे आसपास' का लोकार्पण किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि वरिष्ठ कि और प्रतिष्ठित साहित्यकार नंद भारद्वाज ने कहा कि शालिनी अग्रवाल की किवताओं में देश और दुनिया के अनुभव हैं, जो गहरे अहसासों का प्रतिफल है। वरिष्ठ शायर डॉ. मोहम्मद हुसैन ने समारोह की अध्यक्षता की। समारोह के दौरान कवियत्री डॉ. संगीता सक्सेना और उषा दशोरा ने लेखिका के काव्य के रचनात्मक पक्षों की समीक्षा प्रस्तुत की। विशिष्ठ अतिथि वरिष्ठ किव और व्यंग्यकार फ़ारूक ने कहा कि शालिनी अग्रवाल की कविताएँ गहरे अहसास की कविताएँ हैं तथा आज की आधुनिक कविता तभी समृद्ध होगी, जब किव समय और समाज को ध्यान में रखकर आम आदमी के दुख-सुख, उसकी समस्याओं और संत्रास को कविता में पिरोते हुए उसके साथ खड़े होंगे।

शायर इरशाद अज़ीज़ ने कार्यक्रम का संचालन किया। लोकार्पण समारोह में हिंदी और उर्दू साहित्य की अनेक प्रसिद्ध विभूतियाँ उपस्थित थीं।

साभार : क्रेडेंट टी.वी.कॉम

श्री नितिन यादव के कथा-मंग्रह 'ऑक्सीयाना और अन्य कहारियाँ का लोकार्पण

14 जून, 2022 को राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर और 'समान्तर' के संयुक्त तत्वावधान में युवा कथाकार श्री नितिन यादव के कथा-संग्रह 'ऑक्सीयाना और अन्य कहानियाँ' का लोकार्पण किया गया। राजस्थान लोकसेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष और उपन्यासकार डॉ. आर. डी. सैनी की अध्यक्षता और सुपिरिचित किव और विरष्ठ लेखक कृष्ण कित्या गया। प्रतिष्ठित आलोचक डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल मुख्य वक्ता, विरष्ठ किव व्यंग्यकार फ़ारूक आफ़रीदी विशिष्ट अतिथि और अकादमी के निदेशक डॉ. बी. एल. सैनी स्वागताध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे।

Newsletter-WHS-June 2022 v2.indd 13 07/06/2023 11:5



कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित साहित्यकार कृष्ण कल्पित ने कहा कि संग्रह में यथार्थ की कहानियाँ सम्मिलित हैं तथा इन कहानियों में नया तकनीक, नई तरह की राजनीति, युवाओं में नई तरह की हिंसा, नए औज़ारों और नए गाँवों की चर्चा हुई है। विशिष्ट अतिथि और वरिष्ठ कवि एवं व्यंग्यकार फ़ारूक आफ़रीदी ने कहा कि राजस्थान में कथा-लेखन की एक सुदीर्घ और समृद्ध परंपरा रही है। नए लेखकों को इसे आगे बढ़ाने और समाज को जागरूक करने तथा लोकतंत्र के सामने उपस्थित कठिनाइयों से सचेत कराने का काम करना होगा। प्रसिद्ध आलोचक डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने संग्रह की समीक्षा करते हुए कहा कि लेखक की कहानियाँ आधुनिक युग बोध की कहानियाँ हैं। इस अवसर पर जयपुर और प्रदेश के प्रतिष्ठित लेखक, कवि, कथाकार, चित्रकार, रंगकर्मी, फ़िल्मकार और पत्रकार उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सुश्री शिवानी ने किया।

साभार : क्रेडेंट टी.वी.डॉट कॉम

श्रीमती माधुरी भट्ट की दो पुस्तकों का लोकार्पण



27 अप्रैल, 2022 को पटना में बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान में श्रीमती माधुरी भट्ट की दो पुस्तकों 'काव्य दर्शनी सोबती बल्लभ' तथा 'पूरब की ओर' का लोकार्पण किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि और दूरदर्शन बिहार के कार्यक्रम प्रमुख, डॉ. राजकुमार नाहर ने कहा कि माधुरी जी का समाज और साहित्य के प्रति गहरी निष्ठा है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन अध्यक्ष, डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि युवाओं में भटकाव, संस्कार हीनता, स्त्रियों और कमज़ोरों का उत्पीइन, अत्याचार और मानव जाति का चारित्रिक पतन कवियत्री के संवेदनशील हृदय को पीड़ित करता है। उत्पीइन और हताशा के विरुद्ध उत्साह और

मंगलभाव लेकर उन्होंने इन पुस्तकों की रचना की है। समारोह का उद्घाटन और पुस्तकों का लोकार्पण पटना की महापौर सीता साहू ने किया। इस अवसर पर लेखिका श्रीमती माधुरी भट्ट ने लोकार्पित पुस्तक से कविता-पाठ किया। साथ ही, आयोजित कवि-सम्मेलन में कई हिंदी प्रेमियों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। मंच-संचालन कवि सुनील कुमार दूबे ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन कृष्णरंजन सिंह ने किया।

साभार : कॉन्ट्री इंसाइट न्यूज़.कॉम

'तपती धूप के साए' का लोकार्पण



20 जून, 2022 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में डॉ. शंकर प्रसाद की पुस्तक 'तपती धूप के साए' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि 'तपती धूप के साए' पुस्तक लेखक की अनुभूतियों और सारस्वत सरोकारों के बहाने से बहुत कुछ कहती है। इस रोचक पुस्तक से गुज़रते हुए, सुधी पाठकों के सामने कला, संगीत और सिने-संसार की अनेक महान् विभूतियों के दर्शन होंगे। उन्होंने कहा कि डॉ. शंकर का वैविध्यपूर्ण जीवन और जीवनानुभूति की पूँजी से अर्जित भाव-संपदा पुस्तक को मूल्यवान और पठनीय बनाता है। समारोह का उद्घाटन करते हुए, पूर्व केंद्रीय मंत्री और सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. सी. पी. ठाकुर ने कहा कि लेखन का कौशल सबको प्राप्त नहीं होता। यह एक बड़ा और कठिन कार्य है। डॉ. शंकर प्रसाद की यह पुस्तक संस्मरण साहित्य में आदर की दृष्टि से देखी जाएगी और पाठकगण इससे अवश्य लाभान्वित होंगे। समारोह के मुख्य अतिथि और विश्वविद्यालय सेवा आयोग के अध्यक्ष डॉ. राजवर्द्धन आज़ाद ने कहा कि संस्मरण लिखना अत्यंत जोखिम भरा होता है। जीवन में अनेक तरह की अनुभृतियाँ होती हैं। उन्हें कागज़ पर रोचकतापूर्ण ढंग से उतारना सबसे संभव नहीं। लेकिन यह अत्यंत आनंदप्रद है। द्रदर्शन बिहार के कार्यक्रम प्रमुख डॉ. राज कुमार नाहर ने कहा कि डॉ. शंकर प्रसाद की इस पुस्तक में संस्मरण-साहित्य का एक नया शिल्प दिखाई देता

इस अवसर पर पूर्व प्राचार्य डॉ. नारायण यादव, सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश', श्री ओम प्रकाश पाण्डेय, श्री दीपक ठाकुर, श्री रमेश कॅवल, श्री कुमार अनुपम, चंदा मिश्र, डॉ. अर्चना त्रिपाठी, किव बच्चा ठाकुर, डॉ. शालिनी पाण्डेय, शमा कौसर, डॉ. विनय कुमार विष्णुपुरी, डॉ. नागेश्वर प्रसाद, बाँके बिहारी साव तथा डॉ. अमरनाथ प्रसाद ने भी अपने विचार व्यक्त किए। धन्यवाद-ज्ञापन श्री कृष्ण रंजन सिंह ने तथा मंच-संचालन श्री सुनील कुमार दुबे ने किया।

साभार : डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

सम्मान एवं पुरस्कार

डॉ. दीनानाथ शरण की जयंती तथा सम्मान-समारोह



26 जून, 2022 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में डॉ. दीनानाथ शरण की जयंती तथा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि डॉ. दीनानाथ शरण मनुष्यता और जीवन-मूल्यों के किव और मनीषी समालोचक थे। एक सजग किव के रूप में उन्होंने पीड़ितों को स्वर दिए तथा शोषण और पाखंड के विरुद्ध किवता को हथियार बनाया। वे हिंदी के उन थोड़े से मनीषी साहित्यकारों में थे, जो यश की कामना से दूर, जीवन पर्यन्त साहित्य और पत्रकारिता की एकांतिक सेवा करते रहे। शरण जी की ख्यात उनके द्वारा प्रणीत आलोचना-ग्रंथ 'हिंदी काव्य में छायावाद' से हुई। उन्होंने नेपाल में हिंदी के प्रचार में भी अत्यंत महनीय कार्य किए।

समारोह का उद्घाटन पटना उच्च न्यायालय के विद्वान न्यायाधीश न्यायमूर्ति संजय कुमार ने किया और उन्होंने सुविख्यात किव और बिहार सरकार में उद्योग विभाग के विशेष सचिव दिलीप कुमार को इस वर्ष के 'डॉ. दीनानाथ शरण स्मृति सम्मान' से विभूषित किया। उन्होंने डॉ. शरण की विदुषी पत्नी और लेखिका शैलजा जयमाला के नाम से प्रतिवर्ष दिए जाने वाले स्मृति सम्मान से लेखिका डॉ. ममता मेहरोत्रा को सम्मानित किया। सम्मेलन के उपाध्यक्ष डॉ. शंकर प्रसाद, किव बच्चा ठाकुर, डॉ. सत्येंद्र सुमन, कुमार अनुपम, डॉ. विनय कुमार विष्णुपुरी, वैशाली जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष शशिभूषण कुमार, कि जय प्रकाश पुजारी, डॉ. पंकज प्रियम, श्री श्याम बिहारी प्रभाकर तथा श्री अर्जुन प्रसाद सिंह ने भी अपने

07/06/2023 11:50:56

विचार व्यक्त किए। समारोह में कई गण्यमान्य अतिथि उपस्थित रहे। धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. शालिनी पाण्डेय ने तथा मंच-संचालन डॉ. अर्चना त्रिपाठी ने किया।

साभार : डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

डॉ. मोहन बैरागी को मिला प्रकांड विद्वान राहुल सांस्कृत्यायन सम्मान



14 जून, 2022 को इजिप्ट, काहिरा शहर के गिज़ा में स्थित पिरामिड पार्क रिसोर्ट में एक भव्य आयोजन में मध्य प्रदेश, उज्जैन के डॉ. मोहन बैरागी को हिंदी के प्रकांड विद्वान राहुल सांकृत्यायन सम्मान से विभूषित किया गया। डॉ. मोहन बैरागी द्वारा अल्प समय में हिंदी में विभिन्न विधाओं में लेखन तथा उत्कृष्ट साहित्य के लिए यह सम्मान दिया गया। यह सम्मान मिस्र देश तथा भारत के विद्वानों व साहित्यकारों तथा प्रशासनिक अधिकारियों के कर-कमलों से दिया गया।

भारतीय प्रशासनिक सेवा तथा छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष श्री टॉमन सिंग सोनवानी, विरष्ठ विद्वान साहित्यकार श्री जवाहर गंगवार, डॉ. सुखदेव, छत्तीसगढ़ लोकसेवा आयोग के सचिव श्री जीवनिकशोर ध्रुव, उत्तर प्रदेश, भारत सरकार से यश भारती सम्मान प्राप्त डॉ. रामकृष्ण राजपूत, डॉ. जयप्रकाश मानस, मुमताज़, उच्च शिक्षा विभाग उत्तराखंड की निदेशक डॉ. सविता मोहन व अन्य विद्वानों की उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

साभार : साहित्य कुंज.नेट

डॉ. रामदरश मिश्र को मिला सरस्वती सम्मान



27 जून, 2022 को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के सभागार में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष एवं 'दस्तावेज' पत्रिका के संपादक प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा यशस्वी साहित्यकार डॉ. रामदरश मिश्र को वर्ष 2015 में प्रकाशित उनके प्रसिद्ध कविता-संग्रह 'मैं तो यहाँ हूँ' के लिए के. के. बिड़ला फ़ाउंडेशन का वर्ष 2021 के 31वें सरस्वती सम्मान से अलंकृत किया गया।

साभार : अलका सिन्हा का फ़ेसबुक पृष्ठ

साहित्यकार श्री अच्युतानंद मिश्र को प्रतिष्ठित देवीशंकर अवस्थी सम्मान



4 अप्रैल, 2022 को रवींद्र भवन में स्थित साहित्य अकादमी सभागार में आयोजित समारोह में साहित्यकार अच्युतानंद मिश्र को प्रतिष्ठित 'देवीशंकर अवस्थी सम्मान' से अलंकृत किया गया। श्री अच्युतानंद मिश्र को यह पुरस्कार उनकी आलोचना पुस्तक 'कोलाहल में कविता की आवाज़' के लिए दिया गया। यह पुरस्कार सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, विरष्ठ साहित्यकार मृदुला गर्ग, कवि-आलोचक अशोक वाजपेयी के हाथों प्रदान किया गया। इस अवसर पर देवी शंकर अवस्थी पर एकाग्र फ़िल्म और विवेक की खोज की प्रस्तुति हुई। इस अवसर पर कई विरष्ठ साहित्यकारों और साहित्य प्रेमियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में मंच-संचालन साहित्यकार रवींद्र त्रिपाठी ने किया।

साभार : जागरण.कॉम

श्री गुरुदीन वर्मा को 'अभ्युदय लेखक सम्मान 2022'



6 जून, 2022 को आगरा उत्तर प्रदेश में उत्कृष्ट साहित्य-लेखन के लिए साहित्यकार एवं मीडिया प्रभारी श्री गुरुदीन वर्मा को 'अभ्युदय लेखक सम्मान 2022' से विभूषित किया गया। प्रेरणा हिंदी प्रचार सभा के संस्थापक, किव श्री संगम त्रिपाठी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि श्री गुरुदीन वर्मा एक किव के साथ-साथ एक कुशल, सिक्रय एवं कर्मठ मीडिया प्रभारी भी हैं।

साभार : द ग्राम टुडे न्यूज़पेपर.कॉम

श्रद्धांजलि

डॉ. रमाकांत शुक्ल



11 मई, 2022 को देश के जाने माने संस्कृत विद्वान डॉ. रमाकांत शुक्ल का 82 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वर्ष 2015 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया था। दिल्ली विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले राजधानी कॉलिज के हिंदी विभाग से वे लंबे समय तक जुड़े रहे। वर्ष 2005 में यहाँ से सेवानिवृत्त होने के बाद उन्होंने संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार की ओर ध्यान देना शुरू किया। संस्कृत भाषा के उत्थान से जुड़ी संस्था देववाणी परिषद् के वे संस्थापक थे। इसके अलावा पंडित राज महोत्सव का आयोजन उनकी देखरेख में होता था।

साभार : जागरण.कॉम

श्री नृपेंद्रनाथ गुप्त



12 जून, 2022 को हिंदी के वयोवृद्ध साहित्यसेवी और बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के वरीय उपाध्यक्ष श्री नृपेंद्रनाथ गुप्त का निधन हो गया। वे 88 वर्ष के थे। उनके निधन का समाचार फैलते ही साहित्य और प्रबुद्ध-समाज में शोक की लहर फैल गई। श्री नृपेंद्रनाथ गुप्त साहित्यिक त्रैमासिकी भाषा भारती संवाद के प्रधान संपादक भी थे। हिंदी के लिए उनके मन में जो त्याग की भावना थी, वह दूसरों में कम ही दिखाई देती है। उन्होंने सैकड़ों लोगों को हिंदी और साहित्य की ओर उन्सुख किया।

साभार : लाइव हिंदुस्तान.कॉम

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

Newsletter-WHS June 2022-v2.inad 15 07/06/2023 11/50/57

संपादकीय

हिंदी के वैश्विक प्रसार में गीतों की भूमिका



स्वर, पद, लय, ताल और धुन से युक्त शब्दों की मनोरम रचना को 'गीत' कहते हैं। हिंदी भाषा में भावों को सुन्दर शब्दों में प्रकट करने वाले बहुआयामी गीत हैं। बच्चों को सुलाने वाली माँ की

लोरियों से लेकर, जनमानस की अभिव्यक्ति करने वाले लोकगीत, नव ऊर्जा का संचार करने वाले देश-भक्ति गीत, ईश्वर के प्रति आस्था जगाने वाले भक्ति-गीत, विवाह आदि अवसरों पर गाए जाने वाले खुशी के गीत, तीज-त्योहारों के विशेष गीत, फ़िल्मों के मनोरंजक गीत या हिंदी साहित्यकारों द्वारा रचित प्रेरक गीत; सबका समुचित महत्त्व रहा है। हिंदी के वैश्विक प्रसार में मुख्य रूप से भक्ति-गीतों और फ़िल्मी गीतों का योगदान रहा है।

सन् 1870 में संगीतज्ञ पंडित श्रद्धाराम शर्मा फिल्लौरी द्वारा सुजित सुप्रसिद्ध भजन 'ओउम् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे, भक्त जनों के संकट, क्षण में दर करे ' विश्व के प्रसिद्ध गायकों एवं संगीतकारों द्वारा गाया गया है। हिंद् धर्म के अनुयायियों के अतिरिक्त अन्य पृष्ठभूमि के लोग भी इससे परिचित हैं। प्रताप नारायण मिश्र द्वारा रचित 'पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही इक नाथ हमारे हो र भारत के अनेक विद्यालयों में सुबह की प्रार्थना के रूप में गाया जाता है। मॉरीशस में भी प्राथमिक स्तर की हिंदी पाठय-पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर यह गीत प्रकाशित हो चुका हैं। 60-70 वर्ष की उम्र के मॉरीशसीय बताते हैं कि प्राथमिक पाठशाला में हिंदी की प्रत्येक कक्षा की शुरुआत 'पितु मातु सहायक स्वामी सखा' भजन से होती थी, परिणामस्वरूप इस गीत के हिंदी शब्द उनके मानस-पटल पर अंकित हैं। 'जापान आए हैं, तो मातुभाषा बोलिए या जापानी' शीर्षक से अपने एक लेख में प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण लिखते हैं कि दिसंबर 2008 के मध्य में जापान के टोक्यो युनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ोरेन स्टडीज़ द्वारा आयोजित हिंदी-उर्द शतवार्षिकी कार्यक्रम में जापानी छात्रों ने 'पितु-मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही इक नाथ हमारे हो' का गायन किया था। स्पष्ट है कि अहिंदी भाषियों को भी हिंदी भाषा से जोड़ने में ईश्वर-वंदना के गीतों ने महत्त्वपूर्ण भमिका निभायी है।

हिंदी साहित्यकारों द्वारा रचित भक्ति-गीत भारत की सीमाओं को पार करके अन्य भूखण्डों में लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं। तुलसीदास कृत 'श्री रामचंद्र कृपालु भज मन' का गान विश्व भर के मंदिरों में होता है। यूट्यूब पर असंख्य लोग इसे बारम्बार सुनते हैं। तुलसी कृत चालीस चौपाइयों वाली 'हनुमान चालीसा' सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली पुस्तिका है। सूरदास का 'मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो', मीरा का 'ऐसी लागी लगन, मीरा हो गयी मगन', कबीर का 'चदिरया झिनी रे झिनी', चैतन्य महाप्रभु के भक्ति आन्दोलन से प्रसिद्ध हुआ गीत 'श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी', नरसी महता का 'वैष्णव जन तो तेने कहिये', सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का 'वर दे, वीणा वादिनी, वर दे' आदि रचनाओं के माध्यम से हिंदी के सुमधुर बोल वैश्विक हिंदी परिवार को मंत्र-मुग्ध करते रहे हैं। ईश्वर पर विश्वास न करने वाले लोग भी इन गीतों की धुन का आनंद उठाते हैं और हिंदी भाषा का परिचय प्राप्त करते हैं।

हिंदी फ़िल्मों के सुविख्यात भक्ति-गीत पूरे विश्व का ध्यान आकर्षित करते हैं 'ओ दुनिया के रखवाले, सुन दर्द भरे मेरे नाले', 'तू प्यार का सागर है, तेरी एक बूंद के प्यासे हम', 'तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो', 'इतनी शक्ति हमें देना दाता', 'ए मालिक तेरे बंदे हम', 'हमको मन की शक्ति देना', 'ओ पालन हारे, निर्गुण और न्यारे' आदि गीतों में इतनी मिठास और सम्मोहन है कि विभिन्न देशों के रेडियो चैनलों पर श्रोताओं की फ़रमाइश पर इन गीतों को बारम्बार प्रसारित किया जाता है। पूजा-अर्चना के कार्यक्रमों में भजनों की सी.डी लगायी जाती है। विश्व के जिन लोगों ने कभी हिंदी सीखी नहीं थी, वे आसानी से भक्ति-गीतों के सरल शब्दार्थ और कोमल भाव पकड़कर हिंदी सीखने और हिंदी में संवाद करने की योग्यता प्राप्त कर चुके हैं।

जब 1936 में हिंदी फ़िल्मों में प्ले बैक सिंगिंग का श्रीगणेश हुआ, तब फ़िल्म की सफलता में गीतों की भूमिका निश्चित हुई। तभी से हिंदी में सुन्दर गीत रचने वालों की तलाश होने लगी। कवि प्रदीप, भरत व्यास, पंडित भूषण, नारायण प्रसाद 'बेताब', जिया सरहदी, आगा हश्र कश्मीरी, गुलशन बावरा, आनंद बख्शी, कैफ़ी आज़मी, साहिर लुधियानवी, मजरूह सुल्तानपुरी, शैलेन्द्र, नीरज, जावेद अख्तर, गोपाल सिंह नेपाली आदि गीतकारों ने ऐसे काव्यात्मक और भावनात्मक गीतों की रचना की कि सुनने वाले इन गीतों के दीवाने हो जाते हैं। 'एक दिन बिक जाएगा. माटी के मोल', 'मेरा जीवन कोरा कागज़' आदि जीवन-दर्शन से जुड़े गीतों से लेकर, 'मेरे देश की धरती', 'मेरा रंग दे बसंती चोला' जैसे देश-भक्ति गीत, 'मेरा जूता है जापानी', 'आवारा हूँ' जैसे मनोरंजक गीत, 'इचक दाना, बीचक दाना', 'ससुराल गेंदा फूल' जैसे लोकगीत, 'नानी तेरी मोरनी को', 'तितली उड़ी,

उड़ जो चली' जैसे बालगीत आदि विविध फ़िल्मी गीतों ने दुनिया पर जादू-सा असर किया है।

गीतकारों ने अंग्रेज़ी, फ्रेंच, उर्दू, पंजाबी, मराठी, बंगला, तमिल आदि कई भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करके हिंदी गीत रचे। प्यारेलाल श्रीवास्तव संतोषी का गीत 'आना मेरी जान, मेरी जान, सन्डे के सन्डे' या सावन कुमार का गीत 'प्रीति जोतेम, मेर्सी बोकू बोकू' या मजरूह सुल्तानपुरी का गीत 'अंग्रेज़ी में कहते हैं कि आई लव यू, गुजराती मा बोले, प्रेम करू छू, छू, छू, बंगाली में कहते हैं, आमी तोमाके भालो बाशी और पंजाबी में कहते हैं, तेरी तो, तेरे बिन मर जाणा, मैं तैनू प्यार करना, तेरे जिओ नइयो लबड़ी, ओ साथी हो, नि बलए' आदि गीतों ने सिद्ध कर दिया कि हिंदी के विशाल शब्द-भण्डार में अन्य भाषाओं के शब्द सहजता से समाहित हो जाते हैं। फ़िल्मी गीतों ने हिंदी को समावेशी भाषा के रूप में प्रस्तुत करके वैधिक स्तर पर उसकी स्वीकार्यता बढ़ा दी है।

आज हिंदी के शिक्षण में फ़िल्मी गीतों का प्रयोग करने की चर्चा हो रही है। 21, नवंबर 2021 को वैश्विक हिंदी परिवार ने केन्द्रीय हिंदी संस्थान और विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में 'शिक्षा-रंजन : बॉलीवड गीत-संगीत पर आधारित मल्टीमीडिया हिंदी शिक्षण कार्यशाला' पर वेब-संगोष्ठी का आयोजन किया था. जिसमें एमेरिटस ओसाका विश्वविद्यालय, जापान के प्रो. तोमियो मीज़ोकामी ने विषय-प्रवर्तन में कहा था कि हिंदी गीतों की पुस्तिका के आधार पर विदेशी विद्यार्थियों को सरलता से हिंदी सिखाई जा सकती है। अध्यक्षीय वक्तव्य में युनिवर्सिटी ऑफ़ पेंसिलवेनिया, अमेरिका के सेवानिवृत्त प्राचार्य डॉ. सुरेन्द्र गंभीर ने गीतों के माध्यम से हिंदी अधिगम प्रक्रिया को सबल बनाने का सुझाव दिया था। हिंदी शिक्षण प्रक्रिया में हिंदी गीतों को सम्मिलित करके हिंदी सीखने के अनुकूल वातारण का निश्चय ही सूजन किया जा सकता है।

विश्व में हिंदी का डंका बजाने में हिंदी भक्ति-गीतों और फ़िल्मी गीतों की भूमिका अद्वितीय रही है। हिंदी में यादगार गीत लिखने वाले, गीतों को अपनी सुरीली आवाज़ देने वाले और इन्हें संगीत के मनोरम सुरों में ढालने वाले अनोखे रूप से हिंदी के वैश्विक प्रसार में संलग्न रहे हैं। यदि हिंदी गीत लेखन में अद्भुत प्रतिभाओं का विकास होता रहेगा, तो नवीनतम एवं प्रभावोत्पादक भक्ति-गीतों और फ़िल्मी गीतों की रचना की शृंखला जारी रहेगी और वैश्विक स्तर पर हिंदी का वर्चस्व अवश्य स्थापित होगा।

डॉ. माधुरी रामधारी उपमहासचिव

संपादक सहायक संपादक टंकण टीम : डॉ. माधुरी रामधारी

. अ. ...चुर्त सम्बद्धाः : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी : श्रीमती त्रिशिला आपेगाडु, श्रीमती जयश्री

सिबालक-रामसर्न, श्रीमती विजया सरजु विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस

World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius फ़ोन ई-मेल वेबसाइट : (230) 660 0800 : info@vishwahindi.com : www.vishwahindi.com : www.vishwahindidb.com

: www.facebook.com/groups/ vishwahindisachivalay/

ट्विटर इंस्टाग्राम

डेटाबेस

फ़ेसबुक

: @WHSMauritius : WHS 08

पता

Newsletter WHS June 2022 v2.indd 16

07/06/2023 11:50:57